चन्दामामा
अक्टूबर १९६२
50
NP

Prasad Process

PRIVATE LIMITED.

CHANDAMAMA BUILDINGS, MADRAS - 26

......Started in 1953 we have installed the latest types of Graphic Arts Machinery, employed the best Artists and Artisans who have been specially trained to execute the finest works for

YOU
and
THE TRADE......

CALENDAR OR A CARTON..
POSTER OR A PACKAGE SLIP..
LABEL OR LETTER DESIGN...

......DONE SUPERBLY
IN MULTICOLOR

Bombay Representing Office:

101, Pushpa Kunj, 16-A. Road, Church Gate, Bombay-1

PHONE: 243229

Bangalore Representative:

181, 6th cross Road, Gandhinagar, Bangalore - 9.

PHONE: 6555

डाबर
(डा. एस. के. बर्मन)
प्राइवेट लि०
कलकत्ता
बालशर
(डाबर: बालामृत)
कैल्सियम,
सोडियम
जिंजर या अदरक
व
डिल या मधुरिका
का
स्निग्ध-सार
आदि पदार्थ
इस मीठी
'पुष्टई' में
बच्चों को
सुलभ हैं
खेलने-खाने की
उम्र है इनकी,
ये ही तो परिवार
और राष्ट्र के भावी
कर्णधार हैं।
इनके स्वास्थ्य और
शक्ति के लिये
डाबर का
उत्तम
बालामृत

चन्दामामा

अक्टूबर १९६२

★

विषय - सूची

★

एक प्रति ५० नये पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ६-००

मेट्रिक लम्बाई
में
खरीदिये
१ अक्तूबर १९६२ से लम्बाई नापने के लिए मीटर का प्रयोग जरूरी हो जाएगा ।
इसी तारीख से गज, फुट, इंच का प्रयोग कानून के विरुद्ध होगा ।
कपड़े पर निशान मीटर के अनुसार लगाये जाते हैं और दुकानदार भी कीमत मीटर के अनुसार ही बताता है ।
मीटर, गज से ३.३७ इंच अधिक लम्बा होता है । यदि १ गज कपड़े की कीमत १ रु० है तो १ मीटर कपड़े की कीमत १ रु० ९ नये पैसे होगी ।
मेट्रिक प्रणाली से सरलता व एक रूपता
भारत सरकार द्वारा प्रचारित
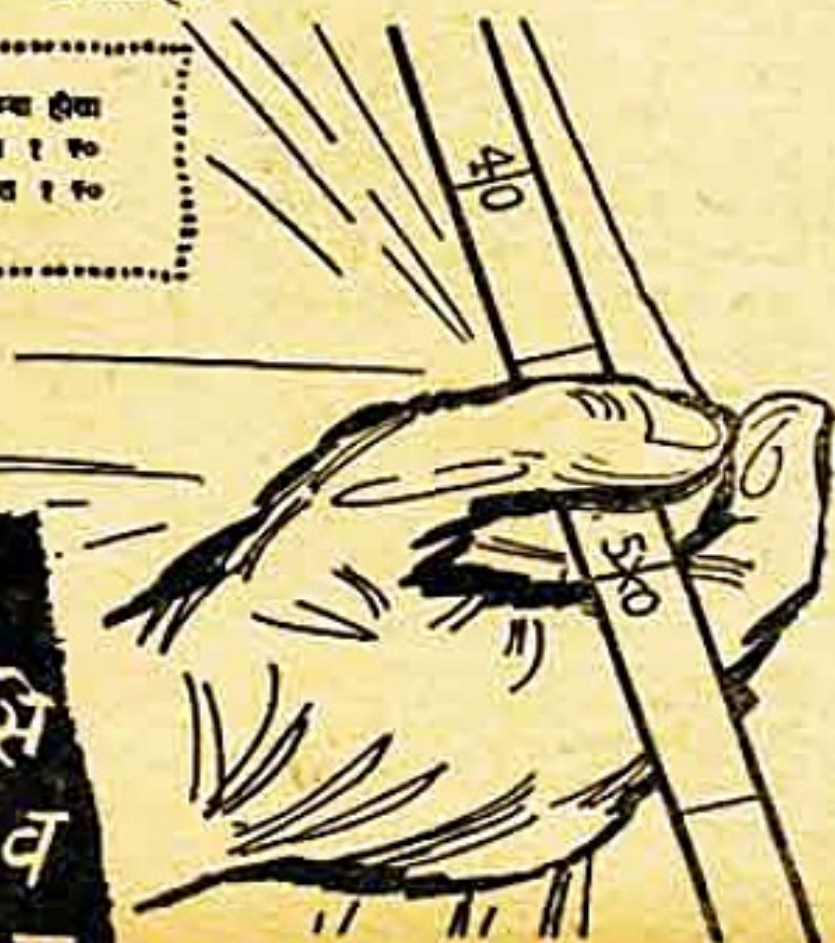
वाचकांचें मत

अक्टूबर १९६२

निवेदन यह है कि मैं तथा हमारे परिवारवाले कई सालों से लगातार मासिक पत्रिका चन्दामामा पढ़ते आ रहे हैं। यह पत्रिका "यथा नाम तथा गुण" कहावत को पूर्णतया चरितार्थ करती है तथा बच्चों के साथ साथ बड़ों का भी मधुर मासिक है।

आनंद कृष्ण, अलीगढ़

मैं आपको प्रथम बार अपना मत भेज रहा हूँ मैं चन्दामामा कई वर्षों से पढ़ रहा हूँ। मुझे इतनी सुन्दर पत्रिका देखने को नहीं मिली। यह हिन्दी मासिक पत्रिका अन्य पत्रिकाओं में विशेष स्थान रखती है। यदि इसमें 'वर्ग पहेली प्रतियोगिता' और 'रंग भरो प्रतियोगिता' भी 'फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता' की तरह प्रकाशित होती तो यह पत्रिका बहुत सुन्दर बन जाती।

अमरजीतसिंह, श्रीगंगानगर

मैं आपकी मासिक पत्रिका चन्दामामा गत वर्ष से पढ़ता आ रहा हूँ। इसमें प्रस्तुत चित्र इतनी अच्छी प्रकार से दिये होते हैं कि वह मन को मोह लेते हैं तथा उनसे बड़ी शिक्षा मिलती है।

गणेश बडूनी, देहरादून

मैं दो साल से आपकी "चन्दामामा" बराबर पढ़ता आ रहा हूँ। सितम्बर १९६२ के अंक में "सिन्दूर की रक्षा, घंमडी, भाई-बहिन व पुण्य पाप" कहानियाँ बहुत ही अच्छी लगीं। अधिक क्या लिखें, इस पत्रिका की जितनी भी तारीफ की जाय थोड़ी है।

रघुनाथसिंह राजपुरोहित, बालवाड़ा

मैं दो साल से "चन्दामामा" पत्रिका पढ़ता आ रहा हूँ। सितम्बर के अंक में कुतकुहल कहानी अच्छी लगी। इस तरह से चन्दामामा की सभी कहानियाँ पर्यहार होती हैं, जैसे भाई-बहन, भयंकर घाटी और संसार का आश्चर्य। मैं इतना अवश्य कहूँगा कि चन्दामामा जैसी कोई पत्रिका नहीं।

शमशाद अली, छपरा

मैं विगत एक वर्ष से "चन्दामामा" का ग्राहक हूँ। मैंने चन्दामामा को एक ही रोचक व उत्कृष्ट मासिक पत्रिका देखी है। अगस्त १९६२ के अंक में "बुद्धि की भेंट" व "मृगशिर" पढ़कर अतीव हर्ष हुआ। "बेताल कथाएँ" में प्रति मास एक एक सी नवीनता देखता हूँ। किन्तु "भयंकर घाटी", "राज-सम्मान" और "भाई बहिन" पढ़कर एकदम ऐसा लगता है कि आगामी पत्रिका कब मेरे हाथों आती है।

कृष्णकुमार, बारासिवनी

मेरा मत है कि आप इसमें जो यह भारत का इतिहास छापते हैं। उसको आप मनोरंजक कहानियों तथा मोटी-छोटी घटनाओं के रूप में भेजे तो अधिक अच्छा रहेगा। क्योंकि इतिहास की पुस्तकें तो बाज़ार में भी काफी मिलती हैं और यह विषय सब को प्रिय भी नहीं होता। इसके स्थान पर तो आप कुछ छोटे-छोटे जादू के खेल, जैसे आप पहले निकालते थे यदि निकालने लगें तो वह अधिक अच्छा होगा। "हितचिन्तक"

आपकी पत्रिका मैं पिछले आठ वर्षों से लगातार पढ़ता आ रहा हूँ। इसका प्रत्येक अंक मेरे लिए संग्रहणीय लगा और यही कारण है कि उसके प्रत्येक अंक मेरे पास सुरक्षित हैं। मैं यही कामना करता हूँ कि उसकी लोकप्रियता बढ़ती रहे और उसका उच्च स्तर कायम रहे।

श्यामनरेश गुप्त, दमोह

पनामा

सौन्दर्यप्रसाधने

'पनामा' सौन्दर्य प्रसाधन आपके सौन्दर्य को हर रूप बढ़ाता है। 'पनामा' सौन्दर्य प्रसाधनोंसे – फेस पावडर, टालकम पावडर, फ्रॅगानटाल्क, शेपरोन स्नो और पोमेड – आप अधिक सुन्दर दिखाई देते हो। इतनाहि नहीं, आपकी त्वचाकी रक्षा होती है और ताजगी आती है। आपके सुन्दर बालोंके लिये पनामा ब्रिलियन्टाईन सबसे उत्तम है।

मनमोहक
सौन्दर्य के
लिये

सोल एजन्ट : लाला गोपिकृष्ण गोकुलदास, ११४, मिन्ट स्ट्रीट, मद्रास-१

तो आल्बो-सांग
का सेवन करें

पौष्टिक तत्वों के अभाव को
दूर करने वाला, बढ़िया, कम खर्चवाला तथा
वैज्ञानिक तरीकों से तैयार किया गया।

आनन्दायक स्वाद, जिसे चाय, काफी, दूध, हलुआ, फल के रस इत्यादि के साथ लिया जा सकता है। आल्बो-सांग शिशुओं, बढ़ रहे बच्चों व प्रसव के बाद माताओं, मानसिक परिश्रम करने वालों तथा बड़े-बूढ़ों के लिए बढ़िया पोषक तत्व प्रदान करने वाला खाद्य है। यह बीमारी छूटने के बाद स्वास्थ्य सुधार, दुर्बलता तथा रक्तहीनता दूर करता है।

पावडर तथा टिकिया
दोनों मिलती है

जे. एंड जे. डीशेन,
हैदराबाद (दक्षिण)

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

जब से हमने "प्रश्नोत्तर" और "पाठकों के मत" के स्तम्भ खोले हैं, बहुत से पाठक हमें लिख रहे हैं। उनकी संख्या प्रति मास बढ़ती जा रही है। हम उनके प्रति कृतज्ञ हैं।

पर हम यह भी देखते हैं कि कई पाठक एक ही पत्र में प्रश्न भी करते हैं, मत भी प्रकट करते हैं और फोटो परिचयोक्ति भी देते हैं। यह ठीक नहीं है। निवेदन है कि इस तरह करने से हम किसी भी बात पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। कृपया पाठक इसका ख्याल रखें।

वर्ष: १४ अक्टूबर १९६२ अंक: २
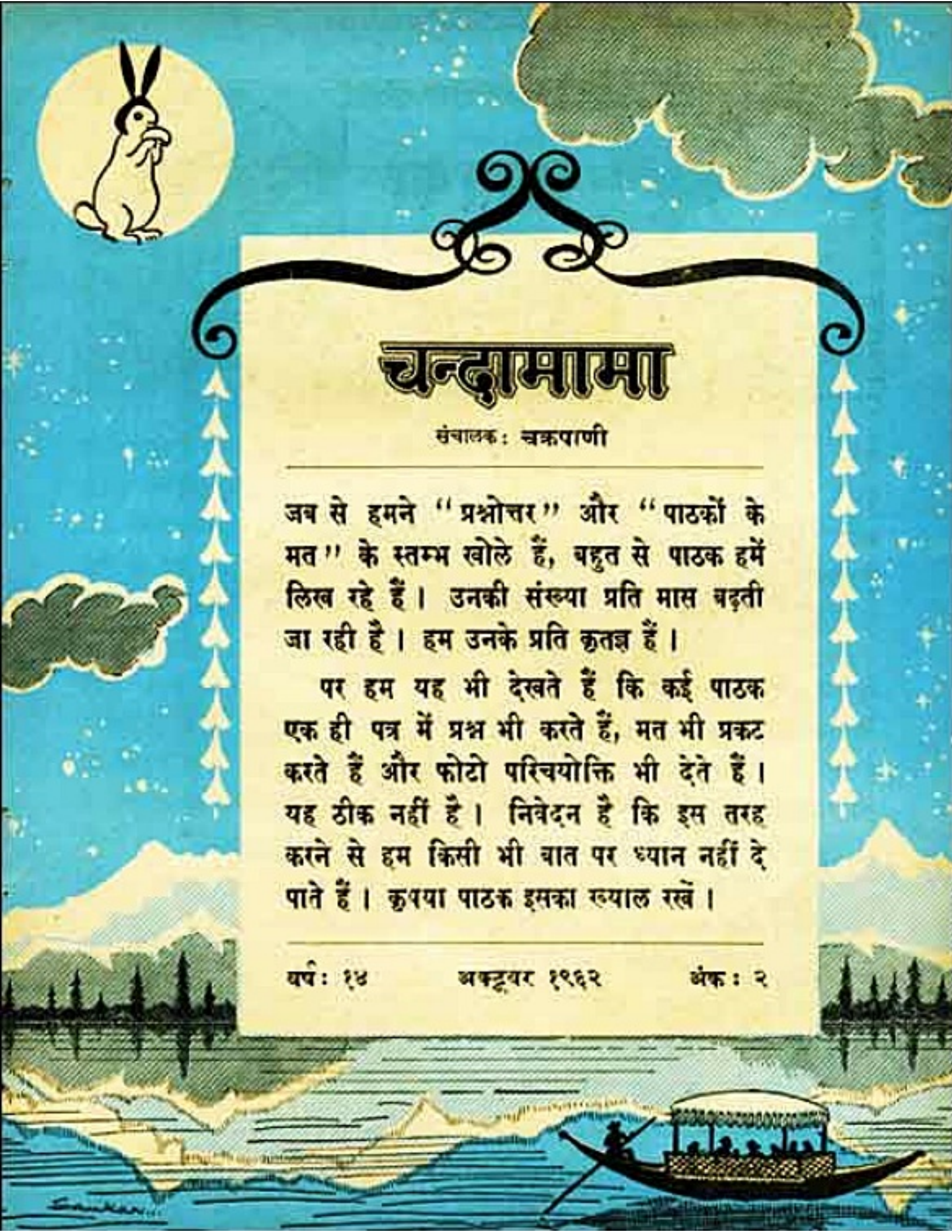
भारत का इतिहास

६४६-६४७ ई. में हर्ष की मृत्यु हो गई। इसके बाद मध्य देश में अराजकता फैल गई। और ८३६ तक प्रथम भोज प्रतिहार के समय तक यह अराजकता जारी रही। कान्यकुब्ज की प्रतिष्ठा की सुरक्षा के लिए यशोवर्मा आदि राजाओं ने प्रयत्न किये, पर वे सफल न हुए। मध्य प्रदेश के बाहर के राजाओं की नज़र कान्यकुब्ज पर ही थी। दसवीं सदी तक प्रतिहारों ने कान्यकुब्ज की प्रतिष्ठा बन.ये रखी। आखिर ११९४ में कान्यकुब्ज का रूप ही बदल गया।

हर्ष के लड़के न थे। उसकी पुत्री ने वलभी के राजा ध्रुव भट्ट से शादी की। हर्ष के बाद, हर्ष की प्रतिष्ठा पाने का प्रयत्न करनेवाला ध्रुव भट्ट का लड़का धीरसेन था। इसकी उपाधि थी—परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर चक्रवर्ती।"

मध्य देश में, यानी गंगा के दोआब के निचले भाग में, आदित्यसेन नाम का ६७२ में राज्य करता था। वह पराक्रमशाली था। उसके पिता माधव गुप्त की हर्ष से मैत्री थी। गद्दी पर आते ही आदित्यसेन ने अश्वमेध यज्ञ किया। यह माल्वा, मगध देश के गुप्त वंश से सम्बन्धित था। इसने अपने समय के प्रसिद्ध वंशों से विवाह सम्बन्ध स्थापित किये। अपनी लड़की का विवाह उसने मौखरी वंश के भोगवर्मा से किया। इनकी लड़की कालान्तर में नेपाल के राजा शिवदेव की पत्नी बनी। और इसने जयदेव को जन्म दिया।

आदित्यसेन के बाद, मगध में देव गुप्त, विष्णु गुप्त, जीवित गुप्त आदि ने शासन किया। परन्तु आठवीं सदी के आरम्भ में मगध गौड़ों के वश में आ गया। (पश्चिम,

१२. हर्ष के बाद

पश्चिमोत्तर बंगाल को गौड़ देश कहा जाता है। वहाँ के लोग गौड़ हैं। पूर्व और मध्य बंगाल को वंग देश कहते हैं।) इन गौड़ों का मगध पर अभी राज्य बहुत दिन तक न चला था कि इस बीच कान्यकुब्ज फिर से उज्ज्वल हो गया। यशोवर्मा ने जो अपने को चन्द्रवंश का बताता था, अपनी कीर्ति सर्वत्र व्याप्त की। इसकी कहानियाँ "गौड़वहो" नामक प्राकृत ग्रन्थ में वाक्पति राजा ने वर्णित की हैं। यशोवर्मा, हर्ष के पग चिन्हों पर चला। उसने गौड़ राजा पर आक्रमण किया, उसको युद्ध में मार दिया। वंगदेश को जीता। फिर वह दक्षिण में नर्मदा तट तक गया। फिर वह राजपुताना की मरुभूमि से होता हुआ अपनी राजधानी में पहुँचा। वाक्पति राज और भवभूति इस यशोवर्मा के राजकवि थे। हर्ष की तरह इसने ७३१ में चीन से दौत्य सम्बन्ध स्थापित किये। आखिर यशोवर्मा काश्मीर के राजा ललितादित्य से लड़ता लड़ता मारा गया।

काश्मीर घाटी अशोक, कनिष्क, मिहरकुल राजाओं के साम्राज्य में पहिले एक प्रान्त था। सातवीं सदी में वह एक प्रमुख राज्य हो गया। कार्कोट वंश के राजाओं ने जिनका आदि पुरुष दुर्लभ वर्धन था, काश्मीर पर राज्य किया। दुर्लभ वर्धन के पोते चन्द्रापीड़, मुक्तापीड़ ललितादित्य आदि ने चीन के सम्राट से राज्य के अधिकार स्वीकार किये। ललितादित्य बड़ा योद्धा था। इसने यशोवर्मा को ही न हराया, अपितु तिब्बती, दर्दुल, तुर्कों को भी सिन्ध राज्य में हराया। और गौड़ राजाओं का भी वध किया। इसने कुछ पुण्य कार्य भी किये। इसके द्वारा निर्मित मार्ताण्डालय प्रसिद्ध है।

जयापीड़मिनयादित्य, ललितादित्य का पोता था। इसने अपने दादा की तरह कान्यकुब्ज के राजाओं को जीता। इसके दरबार में क्षीरस्वामी, उद्भट, दामोदर गुप्त, वामण आदि पंडित थे। परन्तु इसने प्रजा पर बहुत-से कर थोपे। इसलिए यह बदनाम भी रहा। ८५५ में इनका वंश समाप्त हुआ। उत्पल वंश के लोग, काश्मीर के राजा बने।

उत्पल वंश के आदि पुरुष अवन्ती बर्मा ने सिंचाई के लिए विशेष प्रबन्ध किये। इसके पुत्र शंकर वर्मा ने काश्मीर राज्य को सभी ओर विस्तृत किया। इसने कान्यकुब्ज के राजा प्रथम भोज से और उदभान्डपुर (सिन्ध प्रान्त) के राजा ललिय शा से युद्ध किया। गुर्जरों से इसने कुछ इलाका पंजाब में हथिया लिया। इसने भी बहुत से कर थोपे। आज के हजारा जिला के उरश ग्राम के लोगों ने बगावत की और इसको मार दिया।

थोड़े समय तक फिर अराजकता रही। तब ब्राह्मणों ने संगठित होकर यशस्कर नाम के एक ब्राह्मण को राजा बनाया। यशस्कर के वंशज कुछ समय तक काश्मीर पर राज्य करते रहे। फिर पर्वगुप्त राजा बना। पर्वगुप्त का लड़का जब राजा बना तो उसकी पत्नी दिद्दा ने राज्य भार स्वयं निभाया। १००३ तक उसने राज्य किया, फिर अपना मुकुट संग्राम राजा को दे दिया। यह लोहर वंश का स्थापक था।

संग्राम राज के समय में ही मोहम्मद गज़नी ने उदभान्डपुर राज्य पर हमला किया। काश्मीर की सहायता होते हुए भी उदभान्डपुर पराजित हुआ। काश्मीर राजा तो गज़नी का शिकार न हुआ, पर अन्दरुनी झगड़ों के कारण उसका ह्रास होने लगा।

कुमार संभव

अग्निदेव आये मेढ़े पर
उज्ज्वल दीपित देह,
संग लिये स्वाहा देवी को
हिमपति के तब गेह।

हिमप्रदेश का कानन ऐसा
'नन्दन' देख लजाता,
द्वादश मास बसंत वहाँ ज्यों
अपना साज सजाता।

दक्षिण अंचल में गंगा की
बहती कल-कल धारा,
लेता मोह सुरों के मन भी
मोहक शांत किनारा।

पहुँच वहाँ पर अग्निदेव ने
वाहन को ठहराया,
और उतरकर जलधारा में
जाकर खूब नहाया।

डुबकी मारी जभी उन्होंने
खौल उठा गंगा का पानी,
क्षुब्ध क्रुद्ध हो गंगाजी ने
तब अपनी झट माया तानी।

धरकर नारी रूप उसी क्षण
निकलीं जल से बाहर,
बोलीं तट पर खड़ी-खड़ी वे
गुस्से से गरमाकर—

"अग्निदेवता! बोलो तुमको
किसने यहाँ पठाया है,
किसकी आज्ञा से तुमने यों
मेरा रोष जगाया है।

कैसे साहस हुआ कि मेरे
जल में डुबकी मारी है,
मुझको छू अपराध किया क्यों
मूरख, तुमने भारी है?

सच कहता हूँ अपने मन से
मैं न यहाँ पर आया हूँ,
उनकी ही आज्ञा से मैं तो
यहाँ नहाने आया हूँ।"

"मेरा भ्राता?" बोली गंगा—
"क्या उसका है नाम?
किस कारण से उसने ऐसा
करवाया है काम?"

"देवी आपके भ्राता ब्रह्मा
ज्ञात न क्या यह आपको?
मुझे उन्होंने ही भेजा है
और कहूँ क्या आपको!"

अग्निदेव का उत्तर सुन यह
गंगाजी हैरान हुईं,
कुपित वहाँ से चलकर झटपट
ब्रह्माजी के पास गयीं।

ब्रह्मलोक था सब लोकों के
ऊपर दिव्य मनोहर,
स्वच्छ कमल की छटा निराली
शीतल शांत सरोवर।

नारद वीणा बजा रहे थे
सरस्वती गाती थीं गान,
अमृत बरस रहा था चहुँदिशा
पावस-मेह समान।

गर्म बहुत तुम, मैं शीतल हूँ
मेरा तुमसे मेल नहीं,
मज़ा चखाऊँगी अब तुमको
समझो इसको खेल नहीं।"

रुद्र रूप रख गंगाजी का
अग्निदेव ने शीश झुकाया,
और काँपते थर-थर भय से
सारा क़िस्सा उन्हें सुनाया—

"देवी, न मेरी गलती इसमें
करें आप यों रोष नहीं,
कहा आपके भ्राता ने ही
मेरा इसमें दोष नहीं।

उसी समय पहुँची गंगाजी
द्वारपाल चकराया,
क्रुद्ध भाव लख उनका भय से
अपना शीश नवाया।

पैर पटकती गयीं तुरत वे
ब्रह्माजी के सामने,
नारद उनका रंग-ढंग लख
लगे अचानक काँपने।

वीणा उनकी गिरी हाथ से
गये भूल वे उसे बजाना,
सरस्वती ने भी चुप होकर
बंद किया वह मोहक गाना।

ब्रह्माजी से बोली गंगा—
"भैया, तुम क्यों मुझे सताते?
भेज अग्नि को तुम्हीं नहाने
भला मुझे क्यों हो खौलाते?

तुमने ही था कहा इसीसे
छोड़ स्वर्ग को गयी धरा पर,
पहुँचाते हो ताप वहाँ भी
रहूँ शांति से भला कहाँ पर?"

इतना कहकर गंगा दुख से
आँसू लगी बहाने,
ब्रह्मा तब आसन से उठकर
उतरे उन्हें मनाने।

बोले वे—"प्रिय बहन, शांत हो
वृथा खेद मत करना,
विधि का लिखा न मेटे कोई
पड़ा सब कुछ सहना।"

गंगा ने झट टोका उनको—
"विधि की बात भला क्यों कहते?
विधि भी तो तुम ही हो आखिर
विधि का लेख तुम्हीं तो लिखते!"

इसपर बोले ब्रह्मा हँसकर—
तुम हो बड़ी सयानी,
सच कहता हूँ भाई ने अब
हार बहन से मानी।

पावन हो तुम सबसे जग में
इसे जगत है जानता,
पावन तुम-सा अग्निदेव भी
जगत इसे भी मानता।

लेकिन जितनी शक्तिमयी तुम
उतनी शक्ति न उसमें,
ताप बहुत देता है वह तो
सहनशीलता तुममें।

तुलना उसकी कभी तुमसे
रखता क्या वह सानी,
बुझा उसे सकता है पल में
स्वच्छ तुम्हारा पानी।

पिया हुआ पानी तुम अपना
'शरवण सरोवर' में दो त्याग,
ताकि तुम्हारा ताप दूर हो
जाय जलन भी भाग!'

गंगाजी का उतरा गुस्सा
ब्रह्मा ने जब समझाया,
लौट चली फिर धराधाम को
करने शीतल काया।

[१५]

[ब्रह्मदण्डी ने जो उस पर जंगल में बीती थी, उसके बारे में राजगुरु के पास खबर भिजवाई। सेनापति ने केशव आदि को ढूंढने के लिए जंगल में सैनिक भेजे। जंगलियों के सरदार ने केशव और उसके साथियों को राज्य की सीमाओं से बाहर ले जाने के लिए दो जंगली युवकों को नियुक्त किया। बाद में—]

जंगली युवकों के साथ जंगल में कुछ दूर जाने के बाद केशव आदि, जान गये कि ब्रह्मापुर की राज्य की सीमाओं से बाहर भाग जाना उतना आसान न था जितना वे समझ रहे थे।

ब्रह्मापुर के सेनापति द्वारा भेजे गये सैनिक जंगली रास्तों में इधर उधर गश्त कर रहे थे। यही नहीं, आधे राज्य के लालच में कुछ जंगली भी पेड़ पौधों के पीछे केशव को ढूंढ रहे थे। इतने सारे लोगों की आँखों में धूल झोंककर कैसे भागा जाय? तीनों इसी समस्या के कारण अत्यन्त चिन्तित थे।

"क्या तुम कोई ऐसा गुप्त मार्ग जानते हो, जो कोई सैनिक नहीं जानता हो, जिससे हम राज्य से बाहर निकल जायें?" केशव के बूढ़े बाप ने जंगली युवकों से धीमे से पूछा।

"हम इस जंगल में कई गुप्त मार्ग जानते हैं। उनमें से कोई एक भी किसी सैनिक को नहीं मालूम है, ऐसा हमारा विश्वास है। हमें डर उनसे नहीं है। खतरा तो हमें उनसे है, जो आधे राज्य के लालच में हमारे लिए जगह जगह खोज रहे हैं। ये भी सब गुप्त मार्ग जानते हैं।"

इतने में उन्हें सामने पत्थरों पर कुछ सैनिक दिखाई दिये। उनके साथ दो जंगली भी थे।

"सब पेड़ों के पीछे चलो। सैनिक हमारी ओर ही आ रहे हैं।" कहकर जंगली झट पीछे की ओर के पेड़ों के पीछे भाग गये। केशव, जयमल और बूढ़ा भी उनके पीछे भागे।

सब पेड़ों के पीछे छुपकर सैनिकों की ओर देखने लगे। जयमल ने लम्बी साँस छोड़ते हुए कहा—"हमने जंगली भेस बदल रखे हैं। उस हालत में हम क्यों सैनिकों से छुपें। निर्भय होकर, हम उनके देखते-देखते राज्य की सीमाओं को पार कर सकते हैं।"

"सैनिकों को तो आप जंगली युवक लग सकते हैं—पर उनके साथ के जंगली युवक जान जायेंगे कि आप लोग सचमुच कौन हैं।" जंगली युवक ने उसका हाथ पकड़कर कहा।

जयमल अभी उससे कुछ पूछने ही वाला था कि पीछे से उसे कोई शोर सुनाई दिया। तुरत सब ने उस ओर मुड़कर देखा। दूरी पर, उन्हें कुछ सैनिक अपनी ओर आते हुए दिखाई दिये।

"उन्होंने अभी हमें नहीं देखा है। और हम किसी भी तरफ़ नहीं भाग सकते।" कहकर केशव ने झट दो चार बाण हाथ में ले लिये।

जंगली युवक ने उसे रोकते हुए कहा—"इतने सारे लोगों से हम युद्ध नहीं कर सकते। वह देखो, जो गुफा दिखाई दे रही है, उसमें छुप जायें।" वे पहाड़ की ओर गये।

सब पेड़ों के पीछे लुकते छुपते आगे बढ़े। सामने पहाड़ की तराई पर उनको बहुत-सी गुफायें दिखाई दीं। यदि उन सैनिकों ने गुफायें भी देखनी शुरु की, तो हम इस तरह पकड़े जायेंगे जैसे जानवर पिंजड़ों में पकड़े जाते हैं—बूढ़े ने यह बात जंगली युवकों से भी कही।

वे भी यही सोच रहे थे। पेड़ों के पीछे छुपा नहीं जा सकता था। सैनिक उनको चारों तरफ़ से घेर रहे थे। शायद वे गुफाओं में खोजते आ रहे थे। गनीमत थी कि वे अभी तक नहीं पकड़े गये थे।

यकायक आगे आगे चलता, जंगली युवक रुका। सामने के पत्थर के पीछे एक लोमड़ी कुछ दूर उछली। उसके दो बच्चे भागे। जंगली युवक ने बाण निकालकर लोमड़ी पर छोड़ा। उसने पीछे मुड़कर भी न देखा। सामने की ओर भागी। और अपने दोनों बच्चों के साथ वहीं चली गई।

"सौभाग्यवश हमें लोमड़ी दिखाई दी। वह जिस गुफा में गई है, देखी है न! हम भी उसी में चलें।" जंगली युवक ने कहा।

"सैनिक उस गुफा को देखने के लिए आ रहे हैं।" जयमल ने कहा।

"आ रहे हैं तो क्या! हम उस गुफा में तो रहेंगे नहीं! जो लोमड़ी शत्रुओं को देखकर भाग रही हो, वह कभी ऐसी गुफा में न जायेगी, जिसमें से वह भाग न सके।

फिर यह लोमड़ी पंखोंवाली है।" जंगली युवक ने कहा।

केशव और उसके बूढ़े पिता के आश्चर्य की सीमा न थी। वे जंगली युवकों के पीछे गुफा में घुसे। गुफा में अन्धेरा ही अन्धेरा था। कहीं कोई रोशनी न थी। उन तीनों ने सोचा कि जंगली युवक का अनुमान गलत था।

"गुफा से बाहर निकलने का तो कोई मार्ग नहीं मालूम होता।" जयमल ने हताश होकर कहा।

दोनों जंगली युवक आपस में कुछ बातें करने लगे। केशव ने गुफा से सिर बाहर निकाल कर इधर उधर देखा, सैनिक और उनको रास्ता दिखानेवाले जंगली युवक उनकी ओर आ रहे थे।

केशव पीछे मुड़कर कुछ कहने ही वाला था कि जंगली युवक के हाथ में मशाल जली। उसने जयमल की ओर मुड़कर कहा—"क्या तुम सोच रहे हो कि लोमड़ी अभी इसी गुफा में है?"

उसने हँसकर कहा—"हमें उसी रास्ते पर जाना होगा, जिस रास्ते वह गई है। वे आगे बढ़े। वे सब मिलकर बीस फीट गये थे कि यकायक हवा का झोंका आया और मशाल बुझ गई।"

"देखा, अब जान गये कि गुफा से बाहर निकलने का रास्ता कहाँ है।" कहता अभी जंगली युवक दो कदम आगे बढ़ा था कि उस पर रोशनी पड़ी। उसने दूसरों को इशारा किया, वहाँ पत्थरों पर रेंगता रेंगता, एक छलाँग में ऊपर चला गया। बाकी चार भी उसके पीछे पीछे, गुफा से बाहर निकल आये।

उन्होंने पहाड़ पर चढ़कर देखा, तो वह प्रदेश निर्जन-सा जान पड़ा। दूर नीचे नदी बह रही थी। उसके पास में एक

पहाड़ था और उस पर बहती नदी एक झरना बनाती थी।

"उस प्रपात के पास एक सुरंग है। वह सुरंग पानी में से होती कुछ दूर जाती है, फिर नदी के एक और नाले को जाती है, उसको पार करने से कपिल राज्य आता है।" जंगली युवक ने कहा।

इतने में दूसरे जंगली युवक ने ज़रा ज़ोर से कहा—"वह देखो, देखो नदी के किनारे, पत्थरों के पीछे सैनिकों के डेरे दिखाई देते हैं।"

सब ने उस ओर देखा। नदी के किनारे दस-बारह डेरे थे। उनके सामने भाला पकड़े एक सैनिक था।

"सब सैनिक, लगता है, हमें ढूँढने के लिए, पहाड़ों पर घूम फिर रहे हैं। वह अकेला ही वहाँ पहरा दे रहा है। यदि हमने उसे मार दिया तो हम नदी बिना किसी विघ्न के पार कर सकते हैं।" केशव ने कहा।

सब ने इसकी स्वीकृति में सिर हिलाये। केशव ने अपनी तल्वार निकाली और बिल्ली की तरह चुपचाप उस सैनिक की ओर चला। सैनिक किसी और तरफ़ देख रहा था।

केशव के पीछे सब चले। एक बाण से सैनिक को मारा जा सकता था। यदि वह मरने से पहिले चिल्लाया तो उसके बारे में सब मालूम हो जायेगा। उसका चुपचाप काम तमाम करना होगा।

सब यों सोचते सोचते, धीमे धीमे चुपचाप पत्थरों के पीछे से आगे जा रहे थे। इतने में केशव, सैनिक के पीछेवाले पत्थर पर पहुँचा, उसके पीछे से वह उछला। सैनिक के गले पर तल्वार

फेंकी। सैनिक बिना चूं चा किये ही तने की तरह गिर गया।

केशव खड़ा हुआ। वहाँ से करीब सौ गज दूरी पर नदी का किनारा था। किनारे पर दो तीन किश्तियाँ थीं केशव के ईशारा करते ही सब नदी के किनारे आगे भागे आये।

"सब का मिलकर एक किश्ती में जाना अच्छा है। नदी में कहीं कहीं भंवरे हैं। खाली किश्ती को आगे धकेलते हुए हम पीछे पीछे चलेंगे और इतनी सावधानी करने पर भी कोई खतरा आया, तो हमें नदी तैरकर पार करनी होगी।" जंगली युवक ने कहा।

वे सब एक किश्ती में जा बैठे। एक और किश्ती को सामने बाँस से धकेलने लगे। जल प्रपात की ओर निकले।

यह सच था कि नदी में भंवरें थीं। ऐसी जगह जहाँ किश्ती के फँसने की सम्भावना थी वे किश्ती को अलग धकेल देते और किश्ती को उसमें न फँसने देते। थोड़ी देर में वे झरने के पास गये। एक छलाँग में उसके पीछे की सुरंग में जा पहुँचे।

सुरंग में नदी का जल बड़ी तेज़ी से बह रहा था। जल प्रपात में जाते जाते सब भीग गये।

"इस सुरंग के किनारे से टकराकर किश्ती के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।" बूढ़े ने कहा।

इतने में सामने की किश्ती सुरंग के किनारे से जा टकराई और टुकड़े टुकड़े हो गई, और वह किश्ती भी जिसमें केशव आदि बैठे हुए थे उससे जा टकराई और उलट गई।

जो किश्ती में थे, वे नदी में गिर गये। "ज्येष्ठा, कनिष्ठा तुम कैसे हो! क्या हमारे जंगली साथी ठीक हैं!" केशव का पिता ज़ोर से चिल्लाया। इसके जवाब में चारों एक साथ चिल्लाये।

"क्या बाबा, तुम तैर सकोगे! या हम मदद करें!" केशव अपने पिता की ओर आने लगा।

"कनिष्ठा, यहाँ बाबा कौन है!" बूढ़ा चिल्लाया—"शिष्यो! गड़ेजन्ना के साथियों, सुरंग की शिलाओं से बचकर जाओ, यह मौनानन्द बड़ा अच्छा तैराक है। कोई डर की बात नहीं है।" उसने कहा।

चार पाँच मिनट वे सुरंग में ज़ोर से तैरते रहे। उनको यकायक पानी न आगे धकेल दिया।

"लगता है, इस तरफ़ एक और प्रपात है। हम बहुत ऊँचाई से नीचे की नदी...." केशव चिल्लाया।

सुरंग में से बहनेवाला पानी तीस चालीस फीट नीचे की नदी में गिर रहा था। केशव और उसके साथी प्रपात से नदी में जा गिरे।

एक क्षण सब ने सोचा जैसे उनकी जान ही चली गई हो। फिर सम्भलकर उन्होंने एक दूसरे को नाम से बुलाया।

यह जानकर कि सब सुरक्षित थे, वे नदी को पार करने के लिए जल्दी जल्दी तैरने लगे।

जैसे तैसे थके माँदे वे पाँचों किनारे पर पहुँच ही रहे थे कि उन्हें वहाँ छुरी तल्वार लिये, कुछ जंगली लोग घूमते हुए दिखाई दिये। (अभी है)

नागमणि

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह फिर पेड़ के पास गया। शव को उतार कर, कन्धे पर डाल हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा।

तब शव में स्थित बेताल ने कहा— "राजा, क्या तुम किसी असाधारण लाभ की आशा में यों मेहनत कर रहे हो! बड़ा खतरा है। तुम्हारी हालत भी वही होगी जो वैश्य कन्या की हुई थी। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, इसलिए उसकी कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

एक नगर के बाहर एक पवित्र बरगद का पेड़ था। उसकी ठूँठ के खोल में एक साँप था। हर रोज सवेरे वह साँप बाहर आता और धूप में आकर, पेड़ के पास बैठ जाता। नगर के लोग भक्तिवश

के टुकड़े-सी लगतीं। वह नागमणि के लिए मानो तड़प-सी रही थी।

उसने तब नगर के बाहर के सर्प के बारे में सुना। वह देव सर्प था। उसके फण में जरूर मणि होगी। वह धूप में पड़ा रहता था। भक्त उसके लिए दूध वगैरह भी दे रहे थे।

व्यापारी की लड़की ने नागमणि के लालच में एक नीची जातिवाले आदमी को बुलाकर कहा—"तुम रात के समय नगर के बाहर जाओ, वहाँ पेड़वाले साँप को मार दो और उसके फण की मणि ले आओ, अच्छा ईनाम दूँगा।"

उस नीच आदमी ने वैसा ही किया और नागमणि लाकर, व्यापारी की लड़की को दे दी। नागमणि के मिलते ही उसने और मणियों की परवाह न की। उस नागमणि को वह टीके की तरह माथे पर लगाने लगी।

यह सुनकर कि उसकी जाति के साँप की हत्या कर दी गई थी, नागों के राजा, वासुकी ने इसका बदला लेने का निश्चय किया। वह मनुष्य रूप धारण करके नगर में आया। वहाँ पूछ-ताछ करने पर मालूम

उस साँप को दूध वगैरह दिया करते। उस नगर में एक बड़ा धनी, हीरों का व्यापारी रहा करता था। उसके एक सुन्दर लड़की थी। उसे रत्नों से बड़ा प्रेम था। इसलिए उसने बहुत से रत्न जमा कर लिए थे और उन्हें देखकर वह फूला न समाती थी। पर तब भी वह सन्तुष्ट न थी क्योंकि उसके मणियों के भण्डार में नागमणि न थी।

नागमणि उत्तम जाति के साँपों के फणों पर होती है। जब कभी वह मणि चाहती तो उसको अपनी सब मणियाँ काँच

हुआ कि फलां जौहरी की लड़की के पास नागमणि थी।

अब वासुकी ने भी जौहरी का भेस बदला। वह भी एक सुन्दर नवयुवक बना और जौहरी के मकान के पास एक मकान किराये पर लेकर बड़े ऐश्वर्य के साथ रहने लगा। जो कोई दिखाई देता, उसका न्योता देता, दावत देता।

वह हर किसी से कहता—"मैं रत्नों का व्यापार करता देश विदेश घूमता हूँ।"

होते होते वासुकी का रत्नों के व्यापारी से भी परिचय हो गया। उस युवक की श्री-सम्पदा, उदारता, सौन्दर्य आदि देखकर वह उस पर मुग्ध हो गया।

वासुकी ने रत्नों के व्यापारी को बहुत से रत्न उपहार में दिये। आखिर उसने इच्छा व्यक्त की आप अपनी लड़की का मुझ से विवाह कीजिये। रत्नों के व्यापारी भी इसके लिए मान गया क्योंकि तीनों लोकों में उससे अधिक सुन्दर दामाद मिलना असम्भव था।

जौहरी की लड़की अपने होनेवाले पति के बारे में तब तक काफ़ी सुन ही चुकी थी। उसने उसको खिड़की में से

देखा। वह आनन्द विभोर हो उठी और सोचने लगी कि वह यदि उसकी पत्नी हो सकी तो उसका जन्म सार्थक हो जायेगा।

विवाह का मुहूर्त निश्चय हुआ। बड़े पैमाने पर विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। वासुकी रोज, दुल्हिन के लिए टोकरे भर मणियाँ भेंट में भेजा करता। उनको देख वह पगला-सी गई।

शादी बड़े धूम धाम से हुई। पति-पत्नी को कमरे में भेजा गया। रात बीत गई। अगले दिन सवेरे नूतन दम्पति को

जगाने के लिए मंगल वाद्य बजाये गये। बहुत देर तक कमरे में से न पति निकला न पत्नी ही। सबको आश्चर्य हुआ।

व्यापारी के बन्धु जब घबराकर कमरे के किवाड़ तुड़वाकर अन्दर गये, तो दुल्हिन पलंग पर मरी पड़ी थी। उसके शरीर पर दो जगह हल्के काट के निशान थे।

दुल्हे का कहीं पता ही न था। परन्तु दरवाजा खोलते ही उन्होंने देखा कि एक काला साँप जल्दी जल्दी खिसकते खिसकते बाहर चला जा रहा था।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजा, मुझे एक सन्देह है। जौहरी की लड़की को मणियों की कोई कमी न थी। फिर वह क्यों नागमणि के लिए यों ललचायी, क्यों उसने यों मौत मोल ली? क्या नागमणि की कोई विशेषता है, या कोई उसका विशेष मूल्य है? इन प्रश्नों का उत्तर तुमने जान बूझकर न दिया, तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

विक्रमार्क ने तब कहा—"नागमणि में, सच कहा जाये, तो कोई विशेषता नहीं है। अगर कोई हो भी, तो जौहरी की लड़की का उसके लिए ललचाने का कारण न उसकी विशेषता थी न उसका मूल्य ही। यद्यपि उसके पास और ढेर सी मणियाँ थीं। पर चूँकि वह न थी इसलिए ही वह ललचायी थी। स्त्री, जो वस्तु सुलभ नहीं होती उसका मूल्य अधिक समझती है।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। [कल्पित]

ऋषि का माहात्म्य

मालपिद राज्य का राजा सारंगधर था। उसके दो लड़के थे। जिनका नाम था, धवलकान्त और प्रबलकान्त। उस राजा के मन्त्री की एक लड़की थी, रत्नवती। धवलकान्त और रत्नवती में छुटपन से मैत्री थी। जब दोनों सयाने हुए तो रत्नवती ने कहा कि सिवाय धवलकान्त के वह किसी और से शादी नहीं करेगी। यह जान सब ने हर्ष व्यक्त किया। विवाह के लिए मुहूर्त भी निश्चित किया गया।

एक दिन धवलकान्त बगीचे में था कि दुर्भाग्यवश उसको साँप ने काटा। ज़हर के कारण राजकुमार का शरीर काला पड़ गया। वैद्य आये। उस ज़हर को उतारकर उन्होंने राजकुमार को जिलाया। यह सोच मौत टल गई थी, सब बड़े खुश हुए। परन्तु विष का एक छोटा-सा बिन्दु धवलकान्त के शरीर में रह गया था। वैद्य भी इसके बारे में न जान सके। उसका शरीर फिर काला हो गया। बदबू आने लगी। नज़र कम होने लगी। ज़बर्दस्त दर्द के कारण उसे पलंग पकड़नी पड़ी।

अब देश विदेश से बड़े बड़े वैद्य आये। उन्होंने उसकी परीक्षा की। वे चिकित्सा करते करते निराश हो गये। आखिर उन्होंने कहा—"इसकी एक ही एक दवाई है। मानसरोवर के बाद हिमालय में कृष्णवन से "अमृतवल्ली" नाम की बूटी यदि लाई गई और यदि उसका रस उपयोग किया गया तो इनको पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त हो सकेगा। परन्तु यह काम तीन महीने में ही हो जाना चाहिए।"

पर वहाँ कौन जा सकता था! कौन उसे ला सकता था! यह तो दुस्साध्य साहसपूर्ण कार्य है। सब एक दूसरे का मुख ताकने लगे।

उस हालत में प्रवलकान्त ने, जो भाई को बहुत चाहता था, कहा—"और कोई क्यों जाये! मैं ही जाकर उस बूटी को लाऊँगा। मैं अपने भाई को जीवित रखूँगा।" वह यह कह निकल पड़ा।

उसके आने तक धवलकान्त की रक्षा करनी थी। यह सच था कि दास दासियाँ थीं, परन्तु उनको क्या पड़ी थी कि उसकी इतनी परवाह करते। उस समय रत्नवती ने सामने आकर कहा—"वे ही मेरे पति हैं। इसका निश्चय तो हम कभी का कर चुके हैं। इसलिए मैं ही उनकी सेवा करूँगी।"

इस पर राजा और रानी ने कहा—"नहीं बेटी, लड़के की हालत खतरनाक है। तीन महीनों में कैसे वह बूटी आ सकेगी! कैसे उसका उपयोग हो सकेगा! जिस काम के लिए नौकर ही नाक भौं चढ़ा रहे हैं, क्यों तुम करती हो!"

रत्नवती ने ज़िद न छोड़ी। इसलिए उसकी इच्छा को स्वीकार करना पड़ा। तब से रत्नवती ने किसी को वहाँ न आने दिया। वह स्वयं राजकुमार की सेवा करने लगी।

सब सेवक भी खुश थे कि उनका काम यों खतम हो गया था। राजा और रानी भी लड़के की सेवा शुश्रुषा के बारे में निश्चिन्त थे।

नज़र कम हो गई थी, फिर भी राजकुमार जान गया कि रत्नवती ही उसकी देखभाल कर रही थी। वह यह जानकर बड़ा दुखी हुआ। उसने उससे कहना भी चाहा कि वह आशा छोड़ दे कि वह कभी जीवित रह सकेगा, पर उसके निश्चय को देखकर

वह यह न कह सका। रत्नवती की प्रार्थनाओं और परिचर्या को देखकर रानी अपना समय काट रही थी।

* * *

प्रबलकान्त वायुवेग से घोड़े पर सवार हो एक महीने में हिमालय पहुँचा। वह एक पेड़ के नीचे बैठकर सोचने लगा कि कैसे सामनेवाले मानसरोवर को पार किया जाये। उस पेड़ पर उसने एक गरुड़ दम्पति को बातें करता सुना। मादा दुखी हो कह रही थी—हमारे अन्डे हर बार यह सर्प निगल जाता है। चाहें हम कहीं भी उन्हें रखें, पन्द्रह दिन में वह उन्हें खा जाता है। क्या इस सर्प को मारने का कोई उपाय नहीं है? क्या अपनी सन्तान की रक्षा करने का कोई मार्ग नहीं है?"

इस पर नर ने कहा—"यह साँप हमें ही तंग नहीं कर रहा है, बिचारे उस मापीद के राजकुमार धवलकान्त को भी काट आया है, वह अब मरने को है। उसके लिए अमृतवल्ली बूटी ले जाने के लिए उसका भाई आया हुआ है। उस बूटी के चारों ओर और भी कितने साँप हैं। न जाने यह लड़का कुछ कर सकेगा कि नहीं?"

बड़ा हो जाता है, जब वह एक बार फुँकारता है, तो चाहे कोई कितना भी बलवान हो वह मरकर रहता है। इसलिए तुम अमृतवल्ली बूटी नहीं ला सकोगे।"

"हो सकता है कि वह असम्भव कार्य ही हो। फिर भी, हर जीवित को एक न एक दिन मरना ही है। इसलिए यह साँप भी कभी न कभी मरकर रहेगा।" प्रबलकान्त ने कहा।

राजकुमार के साहस और हठ को देखकर नर गरुड़ को बहुत सन्तोष हुआ। उसने कहा—"यदि यही बात है तो तुमको एक रहस्य बताता हूँ। सुनो। यदि हम पक्षियों की जूठन उस साँप के पेट में गई वह ज़रूर मरेगा। इसलिए उसने हमें निस्सन्तान कर दिया, ताकि उसकी अमरता बनी रहे। यही कारण है कि वह हमारे कुटुम्ब का नाश करता रहता है।"

ये बातें सुन प्रबलकान्त ने उन पक्षियों को नमस्कार करके कहा—"मैं तुम्हारी हालत पर बहुत दुखी हूँ। चाहे मेरी जान चली जाये, पर मैं उस अमृतवल्ली बूटी को लाकर रहूँगा। यदि वह साँप दिखाई दिया, तो जान लीजिये कि मैं उसको अपने तलवार के बलि चढ़ा दूँगा।"

तब पक्षि दम्पति ने कहा—"राजकुमार यह आसान काम नहीं है। इस सर्प को एक वर मिला हुआ है, वह जब विरोधी को देखता है, तो उसका बल उससे दुगना हो जाता है। वह ताड़ के पेड़ जितना

यह सुनते ही प्रबलकान्त को एक बात सूझी। पास ही एक ऋषि का आश्रम था। आश्रम में जब उसे कुछ गौयें दिखाई दीं, तो वहाँ जाकर एक पात्र में वह कुछ दूध दुह लाया। वह उसको पक्षियों के पास लाया। उसे थोड़ा पीकर उन्होंने जूठा

कर दिया। यही नहीं, उन्होंने यह भी बताया कि उस पात्र को कहाँ रखना था। जैसा उन्होंने कहा था, वैसा करके राजकुमार छुप गया।

उसी रास्ते वह साँप रोज़ आता जाता था। यथा समय वह आया। दोने में दूध देखकर वह ललचाया और एक घूँट में ही उसे पी गया। तुरत वह ताड़ जितना बड़ा हो गया और धड़ाम से नीचे गिर गया और मर गया। जन्मशत्रु साँप को यों मरा देख गरुड़ पक्षियों के खुशी का ठिकाना न रहा। प्रबलकान्त को बुलाकर कहा—"राजकुमार, अब तुम्हारा काम, समझ लो पूरा हो गया है। इस साँप का फण काट दो, उसमें से चमकती मणि निकालो। एक तमेड़ बनाकर सरोवर में छोड़ दो और उसमें सवार हो जाओ। एक रस्सी पकड़ लो हम उस रस्सी के सिरे को पकड़कर उड़ेंगे और तुम्हें उस पार लगा देंगे। उस मणि के प्रकाश में, तुम काले, अन्धेरे में कृष्णवन में घुस जाओ और बूटी ले जाओ। जब तक इस मणि का प्रकाश निकलता रहेगा, तब तक वहाँ के साँप तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

प्रबलकान्त ने वही किया जो उन्होंने बताया था। वैद्यों के बतायी हुई बूटी को लेकर उन पक्षियों की सहायता से वह इस तरफ़ आया।
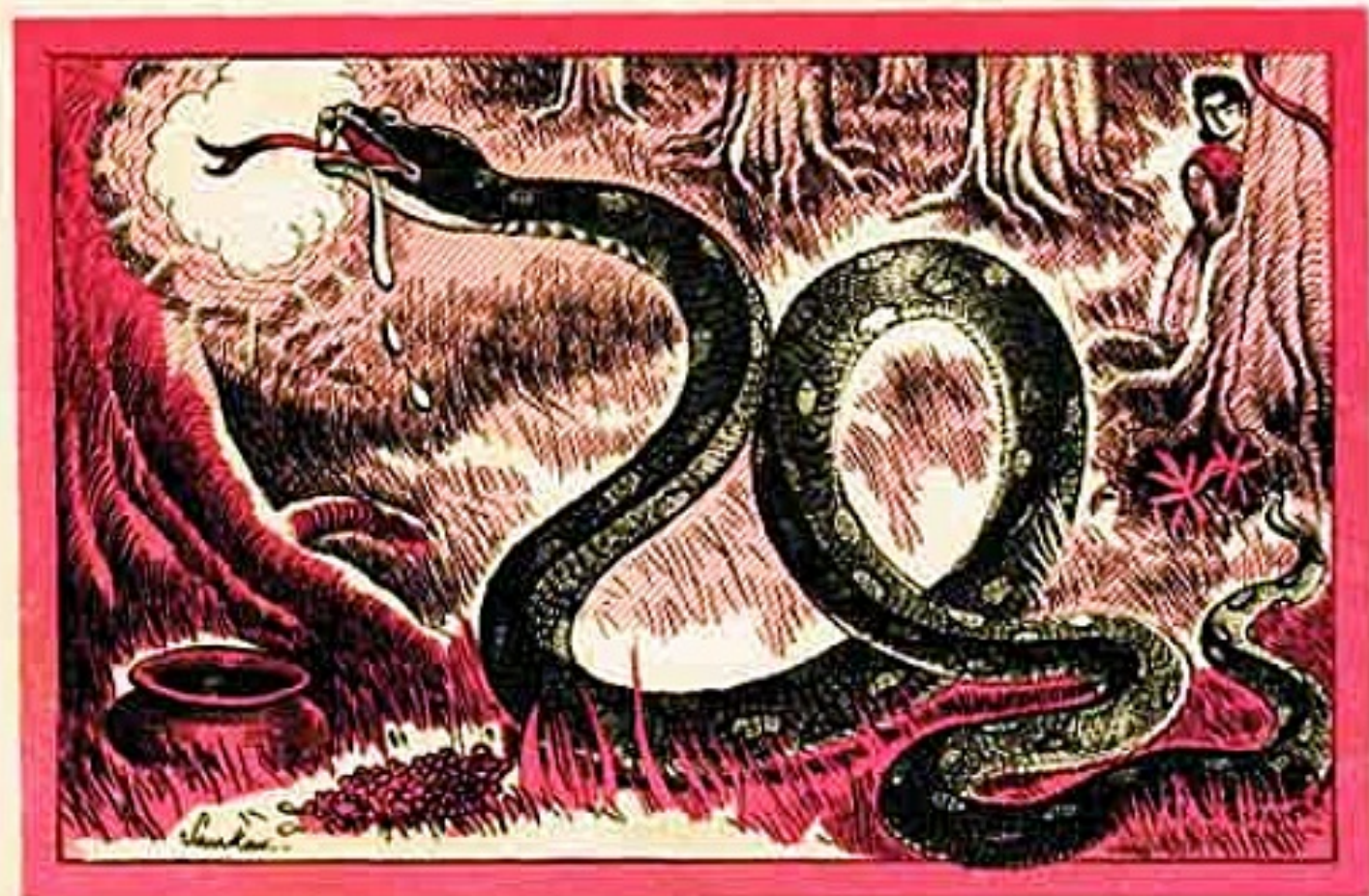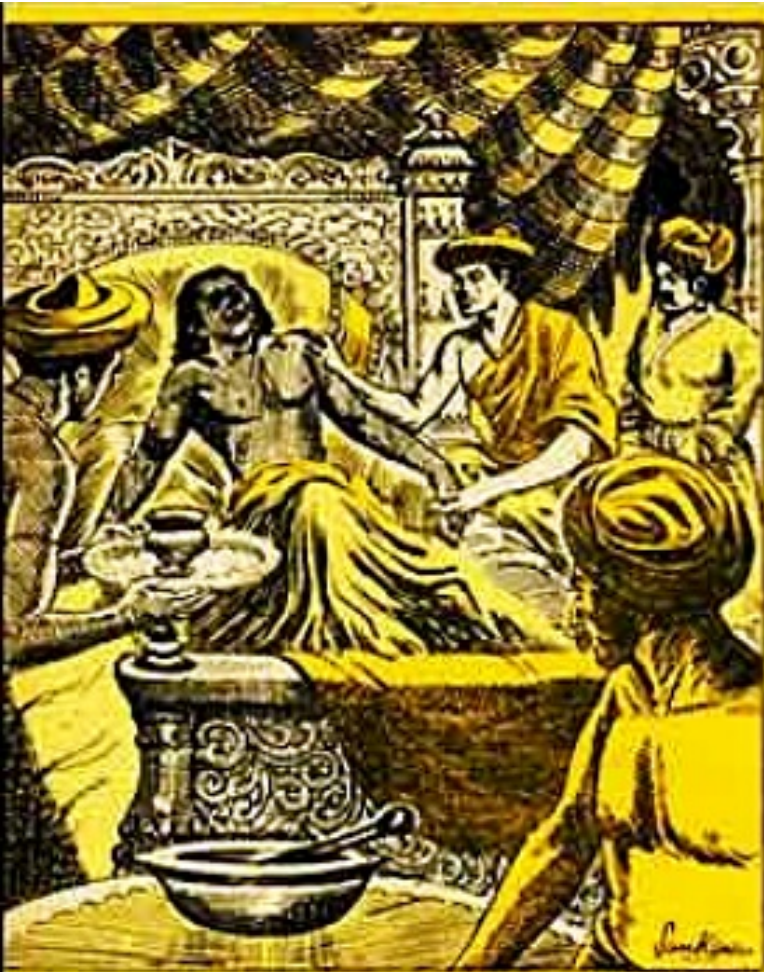
पक्षियों ने फिर प्रबलकान्त से कहा—"राजकुमार! समय के खतम होने से पहिले घर पहुँच जाओ। अपने भाई को जीवित कर लो। तुम्हारा परिश्रम सफल रहेगा। इस मणि की बड़ी महिमा है। आओ, हम इसका रहस्य बताते हैं। इससे लाभ उठाओ। जो अस्वस्थ इसको छुयेगा वह स्वस्थ हो जायेगा। यदि यह कभी काली पड़ गई तो यह तब सूचित करेगी कि तुम्हें क्या करना है। यह ही मणि का रहस्य है।" कहकर पक्षी उड़ गये।

* * *

निश्चित समय से पहिले ही प्रबलकान्त घर पहुँचा। वैद्य, अमृतवल्ली से उसके भाई की चिकित्सा करने लगे। रत्नवती, जो इस आशा में बैठी थी कि कब राजकुमार का स्वास्थ्य ठीक होता है, उसके सन्तोष की सीमा न थी। वह धवलकान्त की सेवा शुश्रुषा करती जाती थी। पर चूँकि सब राजकुमार के बारे में चिन्तित थे, इसलिए किसी ने उसकी परवाह न की।

रत्नवती, जब जल्दी जल्दी स्नान कक्ष में गई और जब उसने आईने में देखा तो मुँह पर काले काले धब्बे थे। सारा शरीर सूज गया था। जब उसने बाल संवारने शुरु किये तो बाल झड़ गये। राजकुमार के विष के कारण ही, रत्नवती की, जो उसकी सेवा कर रही थी, यह हालत हो गई थी। उस हालत में वह न चाहती थी कि उसको कोई देखे। इसलिए वह घर से भाग गई।

धवलकान्त किसी एक और कन्या से विवाह करने की सोच ही रहा था कि

रत्नवती एक मन्दिर के पास भीख माँगती बैठी थी। क्योंकि उसकी शक्ल बदल गई थी, कोई उसे पहिचान न सका।

दो दिन बाद धवलकान्त बिल्कुल ठीक हो गया। उठते ही चिल्लाया—"मेरी रत्नवती कहाँ है! वह रत्नवती कहाँ है, जिसने मेरी रक्षा की थी!" वह छटपटा रहा था। रत्नवती का कहीं पता न था। सब उसे खोज रहे थे। अब धवलकान्त रत्नवती की चिन्ता में कमज़ोर होने लगा।

इस हालत में एक दिन सवेरे तालाब के पास के देवालय के पुजारी को एक अंगूठी मिली। उस पर जब उसने धवलकान्त का नाम देखा, तो उसे ले जाकर राजकुमार को दिया। उसे कभी धवलकान्त ने अपने प्रेम के चिन्ह के रूप में रत्नवती की अंगुली में लगाई थी।

जब उसे पता लगा कि अंगूठी तालाब के पास मिली थी, तो राजकुमार का मन तरह तरह के अनुमान करने लगा। "रत्नवती ने कहीं तालाब में कूदकर आत्महत्या तो नहीं कर ली है! या वह उतनी कमज़ोर हो गई है कि उसकी अंगुली से अंगूठी खिसक गई है! जिसने मेरी मुसीबत में मेरी मदद

की थी, अब वह ही नहीं है तो मेरे जीने से क्या फ़ायदा!" सोचता सोचता वह उसी तालाब में जा कूदा।

इतने में पास ही भिक्षुका के रूप में खड़ी रत्नवती ने उसको रोका—"अरे, यह क्या? मैं ही रत्नवती हूँ, जीवित हूँ। मेरा रूप इस प्रकार बदल गया है। इसलिए मैं आपके योग्य नहीं हूँ। आप किसी और सुन्दरी से विवाह करके आराम से रहिए। यही मेरी इच्छा है।"

धवलकान्त ने उसे पहिचाना। "मैं यह राज्य नहीं चाहता। मुझे कुछ नहीं चाहिए। तुम्हारी रक्षा करता, तुम्हारे साथ ही रहना चाहता हूँ। यह मेरा प्रारब्ध है। राज्य भाई देख लेगा।" उसने कहा।

उसी समय प्रबलकान्त वहाँ आया। वह उनका सम्भाषण सुन रहा था। उसके हाथ की मणि काली पड़ गई। तुरत उसको पक्षी की बात याद हो गई।

"अब यह मणि बतायेगी कि मुझे क्या करना है? यह क्या? यदि मैंने कुछ भी नहीं किया, तो मैं राजा बन सकता हूँ। पर वह धोखा होगा।" सोचकर उसने मणि को भाई के हाथ में रखा। तब भी वह काली रही।

थोड़ी देर सोचकर उसने उसे रत्नवती के हाथ में रखा। उसका हाथ लगते ही वह फिर चमकने लगी। उसके शरीर के रोग भी जाते रहे। उसने सन्तुष्ट हो, फिर वह मणि प्रबलकान्त को दे दी। इस बार मणि फिर काली न पड़ी। चमक रही थी। रत्नवती का सन्तोष ही राजकुमारों का सन्तोष था। इसलिए धवलकान्त का जीवन भी उस समय से प्रज्ज्वलित हो चलने लगा।

वह विवाह जो न हुआ

मधु की मां ने सोचा कि अच्छा हो, यदि उसका विवाह हो गया। परन्तु गांव में कोई भी मधु को अपनी लड़की देने के लिए तैयार न हुआ। चूंकि किसी को विश्वास न था कि वह कभी कामकाजी भी होगा। तब भी वह हमेशा परोपकार करने में ही लगा रहता, घर में एक घड़ी न रहता। लोगों का ख्याल था, यदि उसने शादी भी कर ली तो घर में नहीं रहेगा और पत्नी के कष्ट सुखों में हिस्सा न बँटायेगा।

मधु के लिए लड़कियाँ जब खोजी गईं तो तीन कोस परे, मालूम हुआ, एक गांव में एक लड़की थी। मधु की माँ ने एक पुरोहित को उस विवाह को तय करने के लिए भी भेजा। वह लड़की देखने में तो सुन्दर थी, पर अनाथ थी। छुटपन में ही किसी धनी ने उस पर तरस खाकर उसको पाला पोसा था। वह उन्हीं के घर काम कर रही थी। उसका नाम लक्ष्मी था। उस धनी ने कहा कि जो कोई उसको सौ मोहरें देगा, वह वह उसको लक्ष्मी देकर विवाह कर देगा। मधु की माँ ने सौ मोहरें देकर उस विवाह को निश्चित करने की सोची।

मधु भी खुश हुआ कि उसकी शादी होने जा रही थी। परन्तु उसने पहिले लड़की को देखना चाहा। यदि वह किसी से कहता तो हँसी होती। इस बहाने से कि दुल्हिन के लिए गहने खरीदने थे, वह शहर के लिए निकल पड़ा।

जो पुरोहित—विवाह तय करने गया था, उसने बताया था कि लक्ष्मी सवेरे सवेरे दूध दुहती थी। उस समय तक वह पहुँचने

के लिए ऐंट में मोहरों की थैली रखकर वह तीसरे पहर ही गाँव से निकल पड़ा।

मधु अभी आधी दूर ही गया था कि उसको एक गाड़ी दिखाई दी। गाड़ी एक तरफ़ खड़ी की गई थी। उसमें बैल न थे। गाड़ी के किनारे एक युवक और एक युवती खड़े थे। युवक दर्द से कराह रहा था। युवती उसकी सेवा कर रही थी। वह आँसू बहाती कह रही थी—"अच्छी आफ़त है। तुम गाड़ी नहीं खींच सकते, बड़ा घाव लगा है। अब हमारी क्या हालत होगी!"

यह सुन, मधु ने उनके पास जाकर पूछा—"तुम पर क्या आफ़त आ पड़ी है? यदि मैं कुछ मदद कर सकूँ तो बताओ। परोपकारार्थमिदं शरीरं...."

"मेरा नाम रंगा है। हम दोनों को सवेरे होने से पहिले बहुत दूर पहुँचना है। बैल थे नहीं। इसलिए मैं ही गाड़ी खींच रहा था कि अन्धेरे में ठोकर लगी और गिर गया, घाव हो गया। इस दर्द के कारण और चोट के कारण मैं अब गाड़ी नहीं खींच सकता। यदि सवेरा होने से पहिले हम अपने गाँव न पहुँच गये तो मेरा जीवन और इसका जीवन भ्रष्ट हो जायेगा।"

"तुम इसकी चिन्ता न करो। मैं बलवान हूँ। तुम भी गाड़ी पर सवार हो जाओ। मुझे रास्ता दिखाओ, मैं गाड़ी खींचूँगा।" मधु ने कहा।

"यदि आपने यह किया तो आपका भला होगा।" कहकर, युवक और युवती गाड़ी में सवार हो गये। मधु ने गाड़ी खींचते हुए पूछा—"क्या तुम दोनों पति पत्नी हो?"

"हम दोनों की शादी नहीं हुई है, गाँव पहुँचकर कर लेंगे। यह एक अनाथ लड़की है। एक धनी के घर में काम कर

रही है। इसे उन्होंने छुटपन से पाला था। मैं उनके पड़ोस के घर में काम करता हूँ। हम दोनों बहुत दिनों से एक दूसरे को प्रेम कर रहे हैं। मैंने इसके मालिक से पूछा भी कि मैं इससे शादी कर लूँगा। उसने कहा कि यदि सौ मुहरें मैंने दे दीं तो वह इसके साथ मेरी शादी कर देगा। मेरे पास सौ मुहरें तो क्या, दो मुहरें भी नहीं हैं। इसलिए मैं कुछ न कर सका। इतने में, कोई किसी गाँव से आकर खबर दे गया कि वह सौ मुहरें दे देगा। मालिक इसके लिए मान गया। और यह भी मालूम हुआ कि जो इससे शादी करनेवाला था, वह निरा भोन्दू मिट्टी का माधो था। यह सुन यह रोयी। हम दोनों अपने बाबा के घर जाने के लिए आधी रात के समय निकल पड़े। परन्तु रास्ते में मुझे चोट लग गई और इस बीच आकर आपने भगवान की तरह आकर मदद की।" रंगा ने कहा।

यह कहानी सुनने से पहिले ही मधु गाड़ी खींचना छोड़कर खड़ा हो गया। उसने पूछा—"उस लड़की का नाम क्या है?"

"लक्ष्मी" रंगा ने कहा।

"तब तुम्हारे यों भागकर जाने की ज़रूरत ही नहीं है। चलो वापिस चलें।" मधु ने गाड़ी मोड़ी।

"ठहरो, ठहरो! यदि हमें उस गाँव में किसी ने देख लिया तो कोई हमें जिन्दा न छोड़ेगा।" रंगा गिड़ गिड़ाया।

"उस धनी को बिना मुहरें देकर ले जाना असली अपराध है। उसे मुहरें देकर आराम से शादी कर लो।" मधु ने कहा।

"मेरे पास कानी कौड़ी नहीं है।"

"मेरे पास मुहरें हैं, मैं दूँगा तुम्हें सौ मुहरें। ठीक है न!" मधु ने कहा।

उन तीनों के लक्ष्मी के गांव में पहुँचते पहुँचते सवेरा हो गया। यह जानकर कि लक्ष्मी भाग गई थी, वह धनी गुस्से में शेर की तरह चहल कदमी कर रहा था।

मधु ने उससे कहा—"ये लीजिये सौ मुहरें। रंगा को लक्ष्मी के साथ विवाह करने दीजिये। आपने तो पहिले ही वचन दिया था कि जो कोई सौ मुहरें देगा, उसके साथ लक्ष्मी की शादी कर देंगे।"

"सच तो है, पर मैंने पहिले ही वचन दे दिया है कि लक्ष्मी का मधु के साथ विवाह कर दूँगा। कल परसों वे रक़म लेकर आयेंगे। यदि मैंने लक्ष्मी की शादी रंगा से कर दी तो मैं अपना वचन नहीं रख रहा हूँगा।" धनी ने कहा।

"आप इसकी फिक्र न कीजिये। मैं ही वह मधु हूँ। ये दोनों एक दूसरे को बहुत दिनों से प्रेम कर रहे हैं। मैं इस लड़की से नहीं तो किसी और लड़की से शादी कर लूँगा।" मधु ने कहा।

यह सुनते ही रंगा और लक्ष्मी मधु के पैरों पड़े। उसे भोंदू बताने के लिए उन्होंने माफ़ी माँगी।

मधु की परोपकार की प्रवृत्ति देखकर धनी ने वह रक़म भी न लेनी चाही। उसने कहा—"मुझे यह रक़म नहीं चाहिए। उन दोनों को शादी करने दो।"

"यह भी क्या! क्योंकि ये दोनों यह धन आपको दे न पाये थे, इसलिए मुसीबतें झेलते रहे। ले लीजिये।" मधु ने कहा।

धनी ने वह धन लेकर लक्ष्मी के हाथ में रख दिया। उन दोनों की शादी करवाकर मधु अपने घर वापिस चला आया।

[अगले अंक में एक और घटना]

सदुद्देश्य

"अरे भाई नहाने के लिए कह रहे हैं, हम कहानियाँ फिर कभी सुनायेंगे।" बाबा ने कहा।

"एक और कहानी सुनाते जाओ बाबा।" बच्चों ने कहा।

शायद बाबा भी कहानी सुनाना चाहता था। उसने हँसते हुए सुँघनी निकालकर, नाक में डालते हुए कहा—"मैंने उन लोगों की कहानियाँ सुनाई हैं, जो बेवकूफ़ी के काम करते हैं, पर उनमें अच्छे ख्याल के लोग भी होते हैं। मैं एक बात सुनाता हूँ, जो मेरे छुटपन में गुज़री थी।" उसने यों सुनाना शुरु किया।

हमारे गाँव में मुखिया था, सब उससे डरते थे। गाँव से कोई बिना उससे कहे, बाहर नहीं जा सकता था।

हमारे गाँव में एक कुम्हार भी था, जिसका नाम नाहर था और एक कहार था जिसका नाम राजू था। उन दिनों इस प्रकार के काम करनेवाले सारे गाँव के नौकर थे। यदि गाँव में किसी को कुछ ज़रूरत होती तो ये काम आते। गाँववाले उनके निर्वहण के लिए सालाना कुछ देते थे। यही उनकी आय थी।

एक बार ऐसा हुआ कि कहार राजू को कहीं बाहर जाना पड़ गया और संयोग की बात कि उस दिन रामलाल नाम के गरीब किसान की माँ मर गई। यह रामलाल मुखिया का आदमी था। इसलिए बुढ़िया की अन्त्येष्टि संस्कार स्वयं मुखिया ने उपस्थित होकर करवाया। शव को ले जाने के लिए बाँस वगैरह बँधवाने थे। इसलिए मुखिया ने राजू

के लिए आदमी भिजवाये। पर उसे बताया गया कि वह गाँव में न था। मुखिया गरमा गया। उसने पासवाले गाँव से एक और कहार को बुलवाया और जैसे तैसे काम करवा लिया।

जब अगले दिन राजू वापिस आया तो मुखिया ने उसको खूब डाँटा डपटा— "अरे जब गाँव छोड़कर जाना था, तो मुझ से कहकर क्यों नहीं गये थे? तुम गाँव में अकेले हो, अगर कहीं चले गये और लोगों को जरूरत पड़ गई तो कैसे होगा उनका काम, अगर कभी मुझे बिना बताये तुम बाहर गये तो तुम्हारी खबर लूँगा।"

फिर कुछ दिनों बाद कहार और कुम्हार को मिलकर कहीं बाहर जाना पड़ गया। यदि बिना बताये गये, तो मुखिया उनकी चमड़ी उखड़वा देता। इसलिए वे मुखिया से कहने के लिए उसके घर गये।

पर मुखिया घर में न था। क्योंकि उसकी स्त्री बीमार थी, वह बड़े वैद्य के लिए शहर गया हुआ था।

वे न सोच सके कि क्या किया जाय। जब मुखिया से कहने गये तो मुखिया न था और उन दोनों को कस्बे में ज़रूरी काम

था। यदि बिना बताये गये तो गाँव में किसी को काम पड़ गया तो कैसे?

वे दोनों काफ़ी देर तक सोचते रहे। आखिर नाहर ने एक उपाय बताया। "हमारे गाँव में हैं ही पाँच दस बड़े घर, उन चारों घरों में बड़े बड़े हँडे और अरथियाँ रखकर चले चलें, किसी को ज़रूरत हुई तो उनका काम निकल जायेगा।"

"अच्छी बात बताई है नाहर, अच्छा तो वैसा ही करेंगे।" राजू ने कहा।

रात में ही उसने अरथियाँ तैयार कीं। मुखिया के घर एक अरथी और एक हँडा रखा। बनवारीलाल पटवारी और चौधरी के घर भी यों रखकर, वे तड़के उठकर कस्बे चले गये।

उनके जाने के कुछ देर बाद मुखिया बड़े वैद्य को लेकर, घोड़ागाड़ी से उतरा। तब तक मुखिया के घर पाँच दस लोग जमा हो गये थे। वे जानते थे कि मुखिया की पत्नी बीमार थी। जब उन्होंने घर के बाहर अरथी, हँडे वगैरह देखे तो उन्होंने सोचा—"अब क्या है, सब खतम हो ही गया है।"

उन लोगों को, अरथी और हँडों को देखकर, मुखिया का भी माथा ठनका।

"अब क्या है, अब यह मेरी लुटिया डुबाकर चली गई।" मुखिया रोने चिल्लाने लगा।

वैद्य भी यह सोचकर कि सब कुछ हो जाने के बाद ही आया था, उसी गाड़ी में उसने वापिस शहर जाने की सोची। मुखिया के घर के सामने खड़े लोग तरह तरह की बातें करने लगे।

तभी मुखिया की माँ और पत्नी घर के बाहर मुखिया को रोता देख, यह सोच कि शहर में कुछ अनहोनी हो गई होगी, वे भी रोने लगीं।

पत्नी को जीवित देख मुखिया की जान में जान आयी। इतने में और लोगों ने बताया कि जैसे मुखिया के घर के सामने रखे गये थे और चार पाँच घरों के सामने भी हँडे, चटाई वगैरह रखे गये थे।

"यह कहार का काम है। कुम्हार का काम है। उन्हें बुलाकर लाओ।" मुखिया ने आदमी भेजे। पर वे दोनों सवेरे ही कस्बे चले गये थे।

अगले दिन जब नाहर और राजू वापिस आये, तो मुखिया ने उनको बुलाकर पूछा—"यह तुम्हारी ही करतूत है! क्या बात है!"

"हमें ज़रूरी काम पर कस्बा जाना था। आप गाँव में थे नहीं। इसलिए हम कह भी न सके। यदि किसी को हमारी ज़रूरत हुई, तो उसका यों काम चल जायेगा, यह सोचकर ही हम यों करते गये।" नाहर और राजू ने कहा।

"यानि कभी कभी नादान लोग अच्छे उद्देश्य से ही, बेअक्ली के काम कर बैठते हैं।" कहता बाबा नहाने के लिए उठा।

चोर पकड़ा गया

एक गाँव में एक दम्पति रहा करता था।

पति का नाम था सोमयाजी और पत्नी का नाम था सोमाम्बा। वे बड़े अच्छे थे। बड़े नादान-से थे। हर सफ़ेद चीज़ उनके लिए दूध थी और हर काली चीज़ पानी। पर उनके पास बहुत-सा धन था। हमेशा दान आदि किया करते। भगवान पर भरोसा करके वे जीवन व्यतीत कर रहे थे। क्योंकि वे बहुत साधुस्वभाव के थे, इसलिए गाँव में सब उनका आदर किया करते।

उस गाँव में एक चोर आया। वह दिन में एक एक रईस के घर जाया करता था। जब इस तरह जाता तो ऐसा वेश पहिनता जो उस रईस के लिए उपयुक्त होता। इसलिए घरवाले उसको घर में आने देते। तब वह घर के भेद जान जाता। फिर मौका देखकर उस घर में चोरी किया करता।

चोर ने इस तरह गाँव में दो तीन जगह चोरी की। अब उसकी नज़र सोमयाजी के घर पर थी। उसे मालूम हो गया कि उनके घर में सिवाय उन दोनों के कोई न था। उसने सफ़ेद दाढ़ी, मूँछ लगा ली। सिर पर एक विचित्र मुकुट-सा लगा लिया। एक थैले में कुछ वह धन रख लिया, जिसे उसने चुराया था। अन्धेरा होने के बाद उसने सोमयाजी के घर के किवाड़ खटखटाये।

"कौन है?" सोमयाजी ने पूछा।

"मैं....दरवाजा खोलिये।" चोर ने कहा।

सोमयाजी ने किवाड़ खोले। चोर को देख, चकित होकर उसने पूछा—"आप कौन हैं?"

रामशरण

चोर ने अन्दर आकर किवाड़ बन्द करते हुए कहा—"मैं द्वार देवता हूँ। गृह देवता का सेवक हूँ। गृह देवता ने मुझे यह देखने के लिए भेजा था कि हर घर में दस हज़ार रुपये हैं कि नहीं। यदि किसी के घर में इतना रुपया हो तो ठीक है, यदि न हो तो उसे सवेरा होने से पहिले दस हज़ार कर दो।" यह गृह देवता की आज्ञा है।

"आप सबके घर कैसे जा सकेंगे?" पूछते हुए सोमयाजी, चोर को आदरपूर्वक अन्दर ले गया।

"नहीं, नहीं, गृह देवता आप जैसे भगवद्भक्त, धार्मिक व्यक्तियों के घर ही भेजते हैं। अभी एक सज्जन के घर से आ रहा हूँ। इस थैले में उनके घर से लाया हुआ धन ही है। कहाँ है? जो कुछ आपके घर में है, वह लाकर दिखाओ। मुझे उसे जाँचना है।" चोर ने कहा।

उस नादान दम्पति ने जितना उनके पास धन, सोना वगैरह था, चोर के सामने रखा।

"अरे....आपके यहाँ तो पाँच हज़ार रुपया भी नहीं है। इसे आपके गृह देवता को दिखाकर, सवेरे से पहिले दस हज़ार करके लाऊँगा।" चोर ने जाने के लिए तैयार होते हुए कहा।

"अभी मत जाइए। आपने आकर हमारे घर को पवित्र किया। हमारा आतिथ्य स्वीकार किये बगैर जाना ठीक नहीं है। जल्दी ही भोजन तैयार हो जायेगा।" उन्होंने कहा।

चोर ने सोचा कि यदि उसने उनका आतिथ्य लेने से इनकार कर दिया तो उनको सन्देह होगा। क्योंकि उन्होंने मुझपर पूरी तरह विश्वास कर लिया है, इसलिए सवेरे होने से पहिले कभी भी

गया तो कोई हानि नहीं है। इसलिए चोर आतिथ्य स्वीकार करने के लिए मान गया।

तुरत सोमाम्बा ने चूल्हा जलाया। रोटियाँ सेंकीं, दूध गरम किया। कुछ और बनाकर फलों के साथ चोर को भोजन परोसा। भोजन अच्छा बना था। चोर को भूख लग रही थी। इसलिए उसने पेट भर खाकर लोटा भर पानी पिया।

"भोजन अच्छा बना था, इसलिए कुछ अधिक खा गया। कुछ सुस्ताऊँ।" उसने कहा।

"थोड़ी देर आराम करके जाइये। जल्दी की क्या ज़रूरत है!" उस दम्पति ने कहा। उन्होंने गद्देवाला बिस्तर लगाया। चोर उस पर लेटा ही था कि उसे नींद आने लगी।

"अरे, वे तो इस थैली को यहीं रखकर सो गये हैं। यदि हम सो गये और कोई चोर आया तो! आप इस थैली को अलमारी में रख दीजिये। जब वे जाने लगें तो यह दिया जा सकता है।" सोमाम्बा ने पति से कहा।
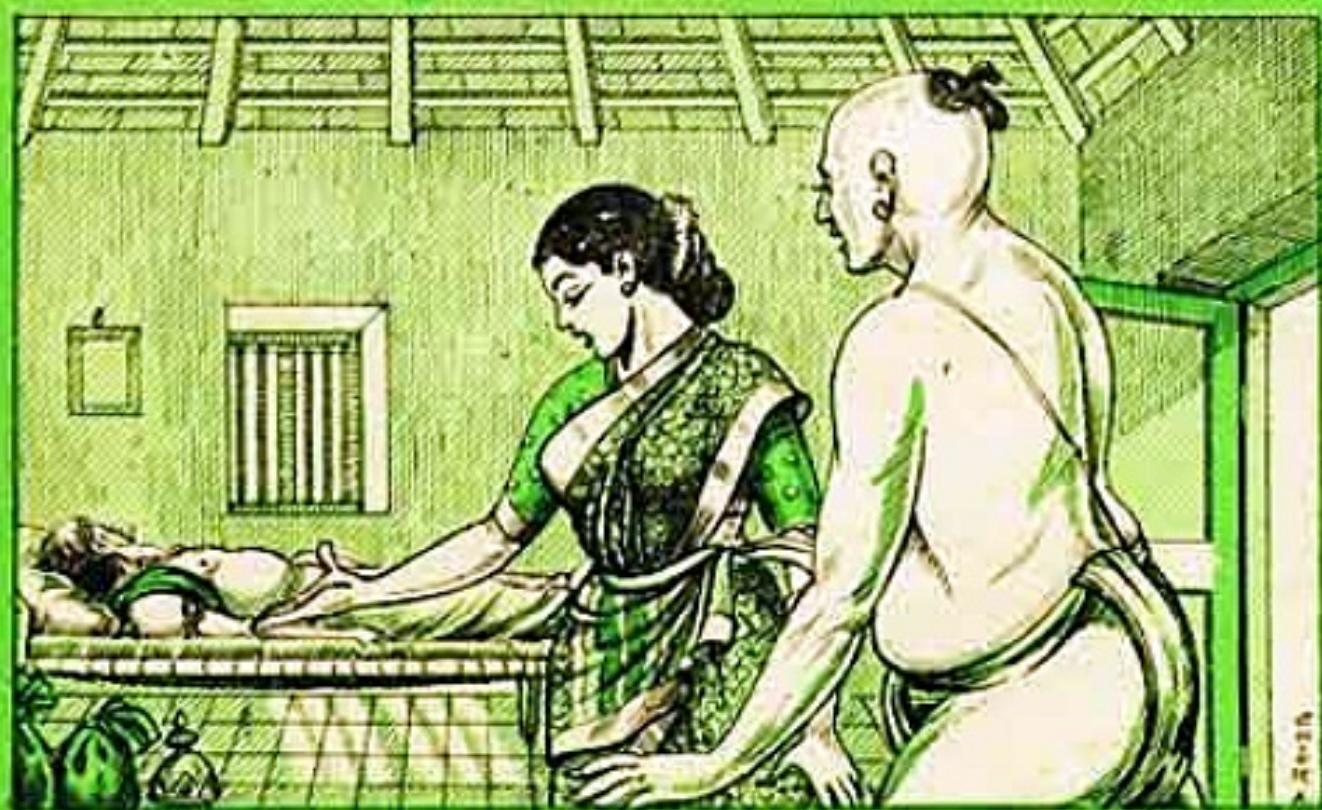
सोमयाजी ने थैली को ले जाकर अलमारी में रख दिया और उस पर ताला लगा दिया। फिर वे दोनों सो गये।

सवेरे के समय चोर उठा। पति-पत्नी दोनों सो रहे थे। घर में नीरवता थी। उसने जाने की ठानी। जब उसने थैली टटोली तो उसके हाथ शकरकन्दियों की थैली आयी। उसे ही अपनी थैली जान उसे सिर पर रख वह गाँव से बाहर निकल गया।

जब वह गाँव से निकलकर तालाब के किनारे पहुँचा तो सवेरा हो गया। तब तक उसकी नीन्द पूरी तरह जा चुकी थी। उसे सन्देह हुआ कि थैली में गहने वगैरह न थे। जब उसने थैली को नीचे रखकर खोला तो क्या था? उसमें शकरकन्दियाँ थीं।

चोर ने सोचा कि अन्धेरे में गल्ती से एक और थैली उठा लाया था। जब वह उसको किनारे पर छोड़ तालाब में मुख धोने के लिए उतरा तो दो तीन भैंसें आकर शकरकन्दियाँ खाने लगीं।

"खाओ, खाओ! आज रात मैं फिर उन बावलों के घर जाऊँगा और अपनी असली थैली ले आऊँगा।" चोर ने कहा।

चोर के चले जाने के थोड़ी देर बाद सोमाम्बा उठी। यह जानकर कि द्वार देवता चला गया था, पति को उठाया—"वे तो बिना बताये ही चले गये। थैली भी नहीं ले गये।"

यह सुन सोमयाजी ने कहा—"अरे पगली, वर देनेवाले बिना बताये ही चले जाते हैं। तुम्हें क्या भरोसा है कि वे थैली नहीं ले गये हैं!"

जब अलमारी खोलकर देखी, तो उसमें थैली थी। परन्तु उसमें गहने और नकद रुपया न मालूम क्यों ठीक दस हज़ार रुपये के ही थे।

"देखो, वे थैली ले भी गये और उसमें पूरे दस हज़ार हमें देते भी गये।" नादान पति ने कहा।

जब शकरकन्दी की थैली चली गई तो उस दम्पति ने सोचा कि गृह देवता को शायद शकरकन्दी अच्छी लगती थी। इसलिए उन्होंने रोज़ अपने आराध्य को शकरकन्दियों का नैवेद्य देने का निश्चय किया।

सोमाम्बा नये गहने पहिनकर अड़ोस पड़ोस के घरों में गई। जो पिछली रात गुज़रा था, उसके बारे में उसने सविस्तार सब से कहा।

उसने कुछ वे गहने पहिन रखे थे, जो नारायण भंडारी नाम के धनी के घर चोरी गये थे। कानों कान यह बात उस तक पहुँची कि उसके घर के गहने सोमाय्या ने पहिन रखे थे। उस पर चोरी का अभियोग लगाना तो असंभव था। आखिर बात क्या थी, यह जानने के लिए सोमयाजी के घर आया। उन दोनों ने जो कुछ गुज़रा था, बताया। यह भी बताया कि उनकी शकरकन्दी की थैली चली गई थी।

तब भण्डारी ने जाकर राज कर्मचारी से शिकायत की, कोई चोर वेष बदलकर सोमयाजी के घर आया था। अलस के कारण जो थैली वह स्वयं लाया था, उनके यहाँ छोड़ता गया और उनकी शकरकन्दियों की थैली लेता गया।

"तो वह ज़रूर अपने गहनों के लिए फिर सोमयाजी के घर आयेगा, तब हम उसे पकड़ लेंगे। आप किसी से यह न कहिये कि आपके गहने सोमयाजी के घर मिले हैं।" राजकर्मचारी ने भण्डारी से कहा।

यह चाल चल गई। ठीक आधी रात के समय, कल के ही वेष में चोर सोमयाजी के घर के पास आया। उसने किवाड़ खटखटाये। सोमयाजी ने किवाड़ खोले। "आप हैं स्वामी! पधारिये, पधारिये।" जब चोर चटखनी लगाने के लिए पीछे मुड़ा तो हथियारमन्द सैनिकों ने उसे पकड़ लिया। उसकी दाढ़ी, मूँछ खींच ली।

उसने गाँव में जिन जिन की चीज़ें चुराई थीं, उन उनकी, वे वे चीज़ें मिल गईं। चोर को सज़ा मिली। क्योंकि उसने चोर को पकड़वाया था, इसलिए राजा ने सोमयाजी को भी थोड़ा बहुत ईनाम दिया।

भाई-बहिन

[३]

बगदाद छोड़ने के बाद घानी छाती पीटकर रोया। चलता चलता वह एक गाँव पहुँचा। एक दुखी था, फिर थका और भूख अब बुरी तरह सता रही थी। वह किसी से आतिथ्य भी न माँग सकता था। वह एक मस्ज़िद में चटाई बिछाकर उस पर बेहोश गिर गया।

अगले दिन जब लोग मस्ज़िद में नमाज़ पढ़ने आये तो उन्होंने सोचा कि वह मर गया था। पर देखने भालने पर पता लगा कि वह केवल बेहोश ही था। कोई भला आदमी उसकी बगल में दो रोटी और शहद का कसोरा छोड़ गया।

घानी बीमार पड़ गया और एक महीना उसी चटाई पर पड़ा रहा। वह यह भी न जानता था कि उस पर मक्खियाँ भिन भिना रही थीं।

यह सोच कि वह जीवित न रह सकेगा, गाँव के बड़ों ने उसे बगदाद के अस्पताल में भेजने का निश्चय किया। प्रबन्ध किया।

एक ऊँटवाला पैसे लेकर उसे अस्पताल पहुँचाने को मान गया। उसको चटाई में लपेटकर, ऊँठ पर सवार किया जा रहा था कि उस तरफ़ उसकी माता और बहिन आयीं। उन्होंने सोचा—"न मालूम कौन है बिचारा, बिल्कुल हमारे घानी की तरह है।" वे पैदल डमास्कस से बगदाद जा रही थीं। वे अनाथ स्त्रियाँ-सी लग रही थीं। धूल धूसरित थीं।

ऊँटवाले ने घानी को ऊँट पर बगदाद पहुँचाया। क्योंकि अस्पताल अभी खुला न था, इसलिए घानी को सीढ़ियों पर लिटाकर, ऊँट को लेकर वापिसी रास्ते पर निकल पड़ा।

सौभाग्यवश वहाँ बगदाद का एक व्यापारी आया। उसने घानी को देखकर, "न मालूम कौन लड़का है, यह बिचारा अस्पताल में दाखिल हुआ तो फिर जिन्दा नहीं निकलेगा। यदि इसका घर ले जाकर इलाज करवाया गया तो उस लोक में सुख पाऊँगा।"

वह अपने गुलामों से उठाकर घानी को घर ले गया। उसने अपनी पत्नी से कहा—"अल्लाह ने हमारे पास अतिथि भेजा है। इसे किसी प्रकार की कोई कमी न हो।"

व्यापारी की पत्नी ने पानी गरम किया, घानी को निहलाया। अपने पति के कपड़े पहिनवाये। उसे एक ग्लास शरबत दिलवाया। उसका मुँह गुलाब जल से धोया। तब घानी का साँस ज़रा ठीक तरह चलने लगा। उसमें थोड़ा बल भी आने लगा। वह गुज़री हुई घटनाएँ याद करने लगा। थोड़ी देर बाद वह कूतल कुलूब के बारे में सोचने लगा।

खलीफ़ा, कूतल कुलूब को काली कोठरी में डलवाकर उसको बिल्कुल भूल गया। चौबीस दिन बाद जब वह उस कोठरी की ओर जा रहा था, तो उसको कुछ बातें सुनाई दीं।

कूतल कुलूब घानी के बारे में कह रही थी—"खलीफ़ा के मुक़ाबले में तुम इतने उदार थे, यह जान कि मैं उनकी स्त्री थी, तुमने मेरे मान की रक्षा की। उसने तुमसे सम्बन्धित स्त्रियों पर अत्याचार किया।

उनका अपमान किया। पर एक दिन आयेगा, जब उसको इन कारनामों के लिए अल्लाह के सामने कैफ़ियत देनी होगी। क्या अल्लाह खलीफ़ा को बिना सज़ा दिये छोड़ देंगे!"

यह जानकर कि ये बातें कूतल कुल्ब कह रही थी, खलीफ़ा जान गया कि वह घानी के बारे में गल्ती कर बैठा था। उसने उसको बुलाकर पूछा—"मैंने किसके साथ अन्याय किया है! मेरी स्त्री के मान की किसने रक्षा की है!"

"व्यापारी घानी ने। वह कितना भोला और भलामानस था। वह गलत काम विचारा कर ही न सकता था।" कूतल कुल्ब ने कहा।

"गल्ती हो गई है। इसके बदले तुम क्या चाहती हो, ज़रूर दूँगा।" खलीफ़ा ने कहा।

"हुज़ूर, मुझे घानी दिलवाइये। यदि वह वापिस आ जाये तो उससे विवाह करने की अनुमति दीजिये।" उसने विनयपूर्वक कहा।

"वचन देकर मुकरूँगा नहीं, तो वैसे ही शादी करो।" खलीफ़ा ने कहा।

"पर कोई नहीं जानता कि घानी कहाँ है। मैं स्वयं उसको खोज लूँगी।" उसने कहा।

"जैसा तुम चाहो, तुम करो। मुझे कोई एतराज नहीं है।" खलीफ़ा ने साफ़ साफ़ कहा।

कूतल कुल्ब बड़ी खुश हुई। हज़ार दीनारें लेकर उसने उसी दिन सारा बगदाद शहर छान डाला। बहुत पूछताछ की, पर उसको कहीं घानी का पता न लगा।

अगले दिन वह बगदाद की सब मंडियों में घूमी। हर मंडी के मुख्य व्यापारी को

पैसा खो बैठा है, नहीं तो प्रेम में कहीं हार गया है।"

यह सुन उसका दिल ज़ोर से धड़ धड़ करने लगा। उसने उस व्यापारी से कहा—"आपको इस समय दुकान छोड़कर आने के लिए कहना ठीक नहीं है! क्या आप किसी आदमी को मेरे साथ भेज सकेंगे, जो मुझे आपका घर दिखा सके।"

व्यापारी ने तुरत एक छोटे लड़के को बुलाकर कहा—"इन्हें ज़रा हमारे घर तक ले जाओ।"

लड़के के साथ कुतल कुन्तल व्यापारी के घर गई। पलंग पर पड़े घानी को भी उसने देखा। पर वह उसे पहिचान न पायी। उसे देखकर तरस खाती, उसने व्यापारी की पत्नी से कहा—"चाहे अपने देश में कोई राजा ही हो, यदि परदेश में आना पड़े तो वह कितना अभागा है। इसका इलाज़ ज़रा अच्छी तरह करवाइये।" कहकर कुछ पैसा देकर वह राजमहल में चली गई।

उसने अपनी कहानी सुनाई। गरीबों को दान करने के लिए उसने उन्हें धन भी दिया। तीसरे दिन वह जौहरियों के बाज़ार में गई। वहाँ के मुख्य व्यापारी को अपनी कहानी सुनाकर दान के लिए उसे भी पैसा दिया।

तब व्यापारी ने उससे कहा—"मैंने एक युवक को घर में आश्रय दे रखा है। वह बड़ा बीमार है। मैं उसका नाम नहीं जानता। होने को तो शव-सा है, पर बड़ा खूबसूरत है। अच्छे खानदान का मालूम होता है। लगता है, या तो वह

वह रोज़ शहर में जगह जगह जाकर घानी की खोज करती। एक दिन जौहरियों के मुखिये ने उससे कहा—"एक दिन

आपने कहा था, जो अनाथ बगदाद आते रहते हैं, ज़रा उनकी पूछताछ करता रहूँ। आज दो अनाथ स्त्रियाँ आयी हैं। वे बड़ी बुरी हालत में हैं, पर अच्छे खानदान की मालूम होती हैं। यह सोच कि बिना बहुत पूछतख्ख के आप उनकी मदद करेंगी, इसलिए मैंने उनकी बात बताई है।"

कूतल कुल्ब ने चाहा कि उन दोनों को उसके पास लाया जाये। व्यापारी उनको ले आया। उसको देखकर उसकी आँखों में तरी आ गई। "अरे भाई, ये तो मुसीबतें झेलने के लिए नहीं पैदा हुई थीं। कभी बड़े मज़े में ज़िन्दगी बिताई थी। यह शक्ल ही बता रही है।"

यह सुन वे दोनों स्त्रियाँ रोयीं। वे घानी की माँ और बहिन थीं। घानी की माँ ने कहा—"मैं, अपने लड़के घानी को खोज रही हूँ। अल्लाह से प्रार्थना करो कि हम अपनी खोज में कामयाब हों।"

यह सुनते ही कुतूल कुल्ब बेहोश हो गिर गई। होश आते ही उसने उन दोनों को गले लगाकर कहा—"अल्लाह पर भरोसा रखो, मुझ पर यकीन करो। अब आपकी मुसीबतें खतम हो जायेंगी।" उसने व्यापारी को हज़ार दीनारें देते हुए कहा—"आप इन दोनों को अपने घर ले जाइये। आप अपनी पत्नी से कहिये कि इनको अच्छी तरह नहलवायें, कपड़े वगैरह दें। इनका अच्छी तरह सत्कार कीजिये।"

जब वह अगले दिन उनको देखने व्यापारी के घर गई, तो वे दोनों बदल गई थीं, ऐसा लगता था जैसे किसी अन्तःपुर की स्त्रियाँ सामने हों।

वे तीनों मिलकर रोगी के पास गयीं। वह तब भी बीमार था। वह अपनी माँ और बहिन को न पहिचान सका।

वे जब तीनों बातें कर रही थीं कि बातों में कूतल कुल्ब की बात आयी। तुरन्त घानी ने आँखें खोलीं। घुटनों पर हाथ रखकर उठने की कोशिश करते हुए कहा—"कहाँ हो कुतूल कुल्ब!"

"यहीं हूँ। क्या तुम सचमुच घानी हो!" कुतूल कुल्ब ने पूछा।

"हाँ, मैं घानी हूँ।" उसने कहा। उसके बाद जो होना था सो हुआ। सब खुशी में रोये। सब ने एक दूसरे को गले लगाया।

कुतूल कुल्ब ने अपने प्रियतम से कहा कि खलीफ़ा अपने किये पर पछता रहा था। उन दोनों को शादी करने की भी अनुमति दे दी थी। यह कहकर वह राजमहल चली गई। वहाँ से उसने उन दोनों स्त्रियों को राजोचित वस्त्र भेजे। चार दिन उनके लिए बढ़िया पौष्टिक भोजन भेजा। फिर उसने उनके बारे में खलीफ़ा से कहा।

खलीफ़ा ने घानी को अपने दरबार में बुलाया। उसके व्यवहार ने खलीफ़ा को मुग्ध कर दिया। घानी ने अपनी कहानी सब के सामने सुनाई। खलीफ़ा को विश्वास हो गया कि वह निर्दोष था।

उसने घानी से माफ़ी माँगी। उसको उसने अच्छी नौकरी दी। नौकर चाकर भी दिये।

घानी की बहिन कितना बड़ी खूबसूरत थी। उसकी सौन्दर्य देखकर, खलीफ़ा ने उससे विवाह करना चाहा। घानी इसके लिए मान गया। घानी और खलीफ़ा का एक ही समय विवाह हुआ। फिर सब सुख से रहने लगे। (समाप्त)

आरण्य काण्ड

राम, सीता और लक्ष्मण को लेकर भयंकर दण्डकारण्य में प्रविष्ट हुए। अरण्य के किनारे ही ऋषियों के आश्रम थे। आश्रम के आसपास का प्रान्त सुन्दर और निवास योग्य था।

ऋषियों ने सीता, राम और लक्ष्मण का उचित आतिथ्य सत्कार किया। उन्होंने कहा—"राम, क्योंकि राजा दुष्टों को दण्ड देता है, इसलिए वह प्रजा के लिए पिता के समान है। भले ही आप नगरों में रहे हों, पर वन में हमारे लिए भी आप राजा हैं। इसलिए आपको हमारी रक्षा करनी होगी।"

राम ने आश्रम में ही रात बिताई। सवेरा होते ही सीता, लक्ष्मण को लेकर, निर्जन भयंकर वन में वे गये। वह भयंकर अरण्य सुन्दर न था। जिधर देखो उधर भयंकर दृश्य थे। पेड़ भी भयंकर थे। जगह जगह पानी और कीचड़ था। गन्दगी थी। हर तरह के भयंकर पशु उस जंगल में थे।

वे उस निर्जन वन में जा रहे थे कि उनको एक राक्षस दिखाई दिया। वह बड़ा ऊँचा था। बड़ा-सा मुख। बड़ा पेट, देखते ही घृणा होती थी, उसके हाथ में एक बड़ा-सा भाला था। उसमें शेर,

बाघ, भेड़िये, हरिण और हाथी का सिर घुसेड़ रखा था। वह राम, लक्ष्मण को देखते ही यम की तरह सामने आया और सीता को उठाकर उसने बगल में रख लिया। "लगता है, तुम्हारी आयु समाप्त हो गई है इसलिए ही इस जंगल में आये हो। तुम्हें देखने से तो लगता है कि तुम मुनि हो, फिर तुम्हारे साथ यह स्त्री क्यों है! मैं उससे शादी कर लूँगा। ऋषियों को खाने की तो आदत है ही, इसलिए तुम्हें मारकर, तुम्हारा रक्त पीऊँगा।"
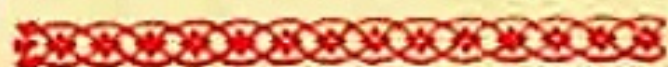
राक्षस की बगल में सीता को छटपटाता देख, राम क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने लक्ष्मण से कहा—"जिस उद्देश्य से कैकेयी ने मुझे वन भेजा था, वह पूरा होता-सा लगता है। लक्ष्मण, जो दुख, पिता के मरने पर राज्य के चले जाने पर हुआ था, वह अब इसके सीता को छूने पर हो रहा है।"

राम का दुख और क्रोध देख लक्ष्मण आगबबूला हो उठा—"जब मैं पास हूँ, तो क्यों आप यों सोच रहे हैं! मैं एक बाण से इसके प्राण ले लूँगा।" राम से यह कहकर उसने राक्षस का परिहास करते हुए पूछा—"क्यों भाई, तुम कौन हो, जो इतने मज़े से इस जंगल में घूम रहे हो!"

"अरे, पूछनेवाला मैं हूँ और जवाब देनेवाले तुम हो, इधर कहाँ जा रहे हो!" राक्षस ने पूछा।

"हम क्षत्रिय हैं। सदाचारी हैं। वनवास कर रहे हैं। तुम बताओ, तुम कौन हो!" राम ने पूछा।

"मैं अपनी बात सुनाता हूँ। मेरा पिता जय है। माँ शतह्रद है। मेरा नाम विराध है। मैंने ब्रह्मा की तपस्या की है और उससे वर पाया है कि मैं किसी शस्त्र

से नहीं मारा जा सकता। इसलिए तुम इस स्त्री को छोड़ दो और अपने प्राण की रक्षा कर लो, भाग जाओ। तुम्हारे प्राण लेने से मुझे क्या लाभ!" राक्षस ने कहा।

राम की आँखें आग उगलने लगीं। "नीच कहीं का, परस्त्री का अपहरण करते हो। तुम्हारा समय समीप आ गया है।" कहकर उन्होंने सात बाण इस तरह छोड़े कि राक्षस के शरीर में वे घुस गये।

विराध उनका उपहास करते हुए हँसा। सीता को नीचे रखते हुए उसने अपने शरीर को यों फैलाया कि सातों बाण नीचे गिर गये। वह भाला लेकर राम की ओर लपका राम ने दो बाणों से उसके भाले के दो टुकड़े कर दिये।

पर विराध ने इसकी भी परवाह न की। राम और लक्ष्मण ने तलवारें लेकर, उसको भोंका। उसने उसकी भी परवाह न की, उनको कन्धे पर चढ़ाकर, वह जंगल में चलने लगा।

"देखें, हमें यह कहाँ ले जाता है!" राम ने लक्ष्मण से कहा।

परन्तु सीता उसका हाथ पकड़कर, जोर से चिल्लाने लगी—"हाय हाय, यह राक्षस राम लक्ष्मणों को उठाकर ले जा रहा है। मुझे भेड़िये और बाघ खा जायेंगे। अरे राक्षस, तेरे हाथ जोड़ता हूँ, तू उनको छोड़ दे। चाहे तो मुझे ले जा।"

सीता के आर्तनाद को सुनकर, राम और लक्ष्मण ने मिलकर तलवारों से विराध के दोनों हाथ काट दिये। वह इस तरह ढह गया, जैसे कोई पहाड़ ढह गया हो। इस तरह नीचे गिरे हुए राक्षस को राम लक्ष्मण ने खूब मारा पीटा, उसकी हड्डी पसली एक कर दी। तब भी उसके प्राण न गये।

विराध के गले पर पैर रखकर, ताकि वह हिल्डुल न पाये, राम ने कहा—"लक्ष्मण, हम इसे यूँहि गाड़ देंगे। एक बड़ा-सा गढ़ा खोद दो।" लक्ष्मण ने उसके पास ही एक गढ़ा खोदा। राम और लक्ष्मण ने उसको, उस गढ़े में जबर्दस्ती धकेल दिया। गढ़े में गिरते गिरते वह गरजा और उसके गर्जन से सारा जंगल गूंज उठा। फिर राम लक्ष्मण ने गढ़े को रोड़े पत्थरों से भर दिया।

राम ने सीता का आलिंगन किया। उसको आश्वासन दिया। फिर लक्ष्मण से कहा—"हम इस जंगल में रहने के आदि नहीं हैं। इसलिए हमारा यहां रहना ठीक नहीं है। जल्दी ही शरभंग महामुनि के आश्रम में चलें।"

वे शरभंग महामुनि के आश्रम में पहुँच रहे थे कि उनको एक विचित्र दृश्य दिखाई दिया। भूमि से ऊपर उनको एक चमचमाता रथ दिखाई दिया। उसमें हरे घोड़े जुते हुए थे। एक महापुरुष, जो सूर्य की तरह प्रकाशमान था, सुन्दर आभूषण और वस्त्र पहिनकर, बिना भूमि को छुये आश्रम की ओर जा रहा था। उसके साथ उसी के तरह के और भी बहुत से लोग थे। सब की उम्र पचीस वर्ष थी।

राम ने लक्ष्मण को यह दृश्य दिखाकर कहा—"लक्ष्मण, वे देवेंन्द्र मालूम होते हैं। मैं जाकर मालूम करता हूँ। तुम और सीता यहीं रहो।" कहकर वे शरभंगाश्रम की ओर गये।

वे आगन्तुक सचमुच देवेन्द्र थे। शरभंग मुनि को स्वर्ग ले जाने के लिए वे स्वयं रथ पर आये थे। यह देख कि राम उसके पास आ रहे थे, इन्द्र ने शरभंग से कहा—"राम मुझसे मिलने

से स्वर्ग पा लिया था। देवेन्द्र मुझे ले जाने के लिए आये थे। जब मुझे मालूम हुआ कि तुम मेरे लिए आ रहे थे, तो मैंने सोचा कि फिर चला जाऊँगा। मैंने जो ब्रह्मलोक, स्वर्ग लोक पाया था, उन्हें मैं तुम्हें दान देता हूँ।"

"स्वामी, जो लोक मैं चाहूँगा, मैं ही उन्हें जीत लूँगा। कृपया, अब यह बताइये कि इस अरण्य में मेरे रहने लायक जगह कहाँ है!" राम ने पूछा।

"इस नदी के किनारे गये, तो सुतीक्ष्ण महामुनि का आश्रम आयेगा। वे तुमको अच्छी जगह दिखायेंगे। जिस प्रकार साँप अपनी केंचुली छोड़ देता है, उसी प्रकार मुझे अपना शरीर छोड़ते हुए देखिये।" कहकर शरभंग महामुनि ने अग्नि में प्रवेश किया। उसका शरीर अस्थियों के साथ दग्ध हो गया। फिर दिव्य शरीर को लेकर, जब वह बाहर आया, तो उसकी आयु पच्चीस वर्ष की थी। सीता, राम और लक्ष्मण यह देखकर चकित रह गये।

शरभंग के देह त्यागते ही आश्रम के मुनियों ने आकर राम से कहा—"पधा

आ रहा है। उसके द्वारा महान कार्य सम्पन्न होना है। जब तक वह कार्य हो नहीं जाता, तब तक मेरा उसको देखना उचित नहीं है।" यह कह अपने रथ पर सवार हो चला गया।

जब वे अपने प्रयत्न में सफल न हुए, तो राम, लक्ष्मण और सीता मिलकर शरभंग के पास गये और उसको नमस्कार किया। तब तक शरभंग ने अग्नि में प्रवेश करने की व्यवस्था कर रखी थी।

राम ने अब देवेन्द्र के बारे में पूछा, तो उसने कहा—"हाँ, मैंने अपनी तपस्या

के तट पर, चित्रकूट में मन्दाकिनी के किनारे रहनेवाले ऋषियों की राक्षस हत्या कर रहे हैं। उनको सता रहे हैं। उनके द्वारा मारे गये ऋषियों के शरीर देखो, ये पड़े हैं। इन राक्षसों से तुम्हें ही मुनियों की रक्षा करनी होगी।"

"मेरे अरण्यवास करने का कारण, मैंने सोचा था, केवल पिता की आज्ञा का पालन ही था। अब आपसे कारण मुझे एक और काम भी करना होगा। मैं अवश्य ऋषियों की राक्षसों से रक्षा करूँगा।" राम ने कहा।

राम जब सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम की ओर जा रहे थे, तो वैखानस आदि मुनि भी उनके साथ निकले। उन सबने एक नदी पार की और पर्वत के पासवाले बन में गये। उस बन में ही सुतीक्ष्ण महामुनि का आश्रम था।

राम ने जब अपना नाम बताकर नमस्कार किया, तो सुतीक्ष्ण ने उनका आलिंगन किया। उन्होंने कहा—"जब से तुम चित्रकूट पहुँचे थे, तभी से मेरे पास तुम्हारे समाचार आ रहे हैं। मैंने बहुत तपस्या की है, वह सब तपस्या मैं तुम्हें देता हूँ। सीता, लक्ष्मण के साथ सभी लोकों का आनन्द लो।"

"स्वामी, लोकों को तो मैं स्वयं प्राप्त कर लूँगा। मुझे इस बन में कोई ऐसा स्थल बताइये, जहाँ मैं रह सकूँ।" राम ने कहा।

"चाहो, तो इसी आश्रम में रहो। यहाँ सिवाय पशुओं की बाधा के और कोई बाधा नहीं है।" सुतीक्ष्ण ने कहा।

"मैं गल्ती से आश्रम के पशुओं को मार सकता हूँ। इसलिए मैं यह आश्रम नहीं चाहता।" राम ने कहा।

राम, लक्ष्मण और सीता ने वहीं रात सुखपूर्वक काटी। अगले दिन नित्यकृत्य से निवृत्त होकर उन्होंने सुतीक्ष्ण से कहा—"हमारे साथ जो मुनि आये हैं, वे ज़रा जल्दी कर रहे हैं। इसलिए हमें विदा दीजिये।"

सीता ने राम और लक्ष्मण को उनके आयुध लाकर दिये। रास्ते में सीता ने राम से कहा—"संसार में तीन महापाप हैं, एक असत्य बोलना, दूसरा परस्त्री की अपेक्षा करना और तीसरा दूसरों से निष्कारण वैर करना। इन सब में निष्कारण वैर ही सबसे बड़ा पाप है। पहिले दोनों पाप तो तुम्हें न छुयेंगे, मैं जानती हूँ। पर तुम क्यों उन राक्षसों को मारते हो, जिन्होंने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा है! क्यों तुमने ऋषियों को वचन दिया कि तुम राक्षसों को मारोगे! सच कहा जाये तो आयुधों को साथ रखना ही गल्ती है। पहिले कभी कोई मुनि तपस्या कर रहा था, इन्द्र भट के रूप में आया। उसने उस तपस्वी से अपनी तल्वार को सुरक्षित रखने के लिए कहा और कहा कि वह फिर उसे ले जायेगा। वह मुनि उस तल्वार को सुरक्षित रखने के लिए अपने साथ लेकर, इधर उधर फिरता रहा। उससे पहले पहल उसने फल वगैरह काटे। परन्तु होते होते उसमें हिंसा की प्रकृति आ गई, आखिर उसे नरक जाना पड़ा। इसलिए हथियार छोड़कर, आओ, हम लोग तपस्या करें। यह मेरा आदेश नहीं है, निवेदनमात्र है।"

राम ने सीता से कहा—"जब उन मुनियों ने इतनी प्रार्थना की, तो मैंने वचन दिया कि मैं उनकी रक्षा राक्षसों से करूँगा और उनको निर्विघ्न तपस्या करने दूँगा। तुम्हें और लक्ष्मण को छोड़ दूँगा, पर अपनी प्रतिज्ञा नहीं छोड़ूँगा।

संसार के आश्चर्य:

१०. ग्रान्ड कान्योन

भूमि में एक घाटी की कल्पना करो। उसकी लम्बाई २१७ मील है। गहराई करीब एक मील, चौड़ाई चार मील से आठ मील तक, इस प्रकार की घाटी उत्तर अमेरिका के अरिजोना प्रान्त में है। यह ही ग्रान्ड कान्योन है। इसकी तह में कोलराडो नदी बहती है। इस घाटी के नीचे के पत्थर १५० करोड़ वर्ष पूर्व के हैं। भूमि का इतिहास हमें इस घाटी में स्पष्ट दिखाई देता है।
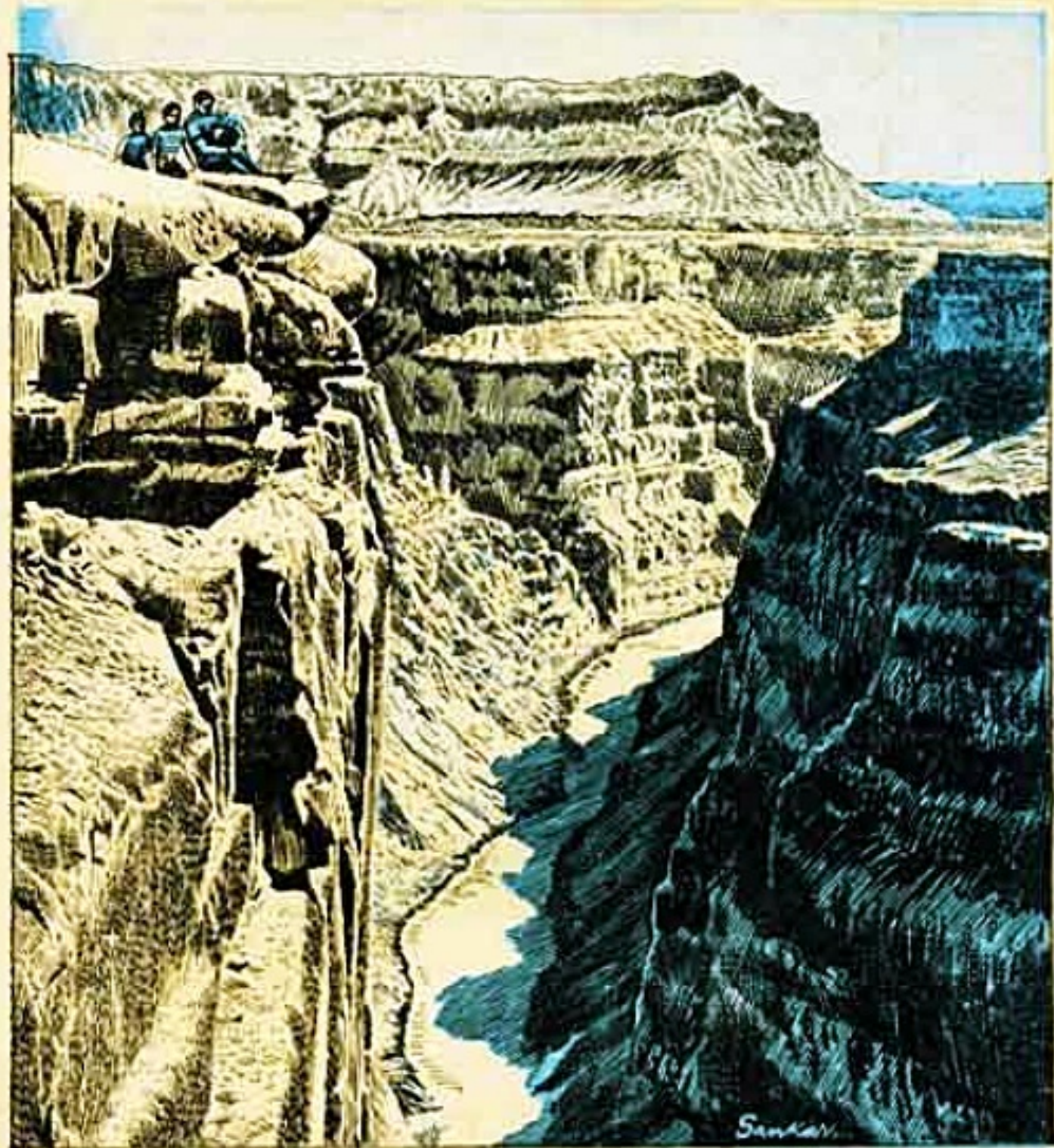
१. हेमेन्द्र कुमार, आगरा

क्या बेताल कहानियाँ सही हैं ?

कहानियाँ हैं, कल्पित हैं।

२. पी. प्रभाकर, कालिकट्ट

आप मलयालम में चन्दामामा क्यों नहीं छापते ?

छापते थे, पर इसके प्रचलन की वृद्धि उतनी सन्तोषजनक न थी।

३. देश दीपक, नई दिल्ली

गोल मटोल भीम और दास और वास की कहानी क्यों बन्द कर दी ?

कहानियाँ हैं, कभी न कभी तो खतम होंगी ही।

४. मोहन लाल, भटिन्डा

क्या आप चन्दामामा पंजाबी में भी प्रकाशित करते हैं ?

जी नहीं।

५. भरतलाल कटकवार, बलौदा

आप वीर राजपूतों का इतिहास क्यों नहीं छापते ?

छाप चुके हैं और छापेंगे।

६. दीपिका, पत्थरघाट

आप एडवार्टायज़मेन्ट के बदले कहानी क्यों नहीं देते ?

दोनों की अपनी अपनी जगह है और दोनों अपनी जगह ठीक भी हैं।

७. जे सिंह टिकवाज, लोकोवाड़ा

चन्दामामा केवल बच्चे ही पढ़ सकते हैं, या बूढ़े जवान भी ?

जो कोई पढ़ सकते हैं, उन सब के लिए है "चन्दामामा"।

८. सुरिन्द्र सिंह, जमेशदपुर

हमारे शहर में "चन्दामामा" बहुत देर से मिलती है, जिस कारण मैं फोटो परिचयोक्ति में भाग नहीं ले सकता हूँ। मैं क्या करूँ?

आपकी शिकायत पर हम विचार कर रहे हैं। कुछ व्यवस्था अवश्य करेंगे ताकि आप भी भाग ले सकें।

९. राजेन्द्रकुमार पेशी, कोटा जन्क्शन

आप "चन्दामामा" में पुरानी कहानी व उपन्यासों को फिर से क्यों नहीं छापते?

पत्रिकाओं में यह नहीं होता, यदि हम इस तरह नये पाठकों की सेवा कर रहे होंगे, तो पुराने पाठकों के साथ अन्याय भी कर रहे होंगे।

१०. दिनेश कुमार वगैरहा, बरौदा

भारत के इतिहास के बाद क्या छापेंगे?

इसे खतम तो होने दीजिए।

११. नियति, वडाल

चन्दामामा किस आयु के बच्चों के लिए है?

उन सब के लिए जो "चन्दामामा" पढ़ सकते हैं, और समझ सकते हैं। इस बूढ़े भी पढ़ते हैं। पर हमारा ध्यान विशेषतः किशोरों की आवश्यकता की ओर ही रहता है।

१२. उषा, नई दिल्ली

आप "चन्दामामा" में पहेली वगैरह क्यों नहीं देते?

कहानियों के लिए ही जगह कम है, अब पहेलियों के लिए कहाँ से जगह लाये!

१३ राजकुमारी कौर, जलन्धर

आप अपने पत्रिका द्वारा बच्चों की एक क्लब क्यों नहीं आरम्भ करते?

यह शायद पत्रिका के दायरे से बाहर है।

१४. तुषार कुमार, लखनऊ

क्या आप इस वर्ष दीपावली अंक निकालेंगे?

हाँ, अवश्य।

Photo by P. R. Shinde

पुरस्कृत परिचयोक्ति

फिसल गया हूँ ऊपर से !

प्रेषक : अशोकचन्द्र - कानपुर

Photo by P. V. Subramanyam

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फँस गया हूँ चक्कर से !!

प्रेषक :
अशोकचन्द्र - कानपुर

अन्ध विश्वास ★ [रामतीर्थ कथा]

एक गाँव में एक पंडित रहा करता था। वह एक दिन बहुत दूर चलकर आया। उसका शरीर दर्द करने लगा।

उसने अपने शिष्य को बुलाकर कहा—"अरे भाई, सारा शरीर दुख रहा है। इस चटाई पर सो जाता हूँ। मेरे ऊपर खड़े होकर, पैरों से ज़रा मेरे शरीर की मालिश तो करो।

गुरु की बात सुनते ही शिष्य सिर और मुख पर हाथ रखकर कहने लगा—"गुरु जी, क्या कह रहे हैं, आपके पवित्र शरीर को पैरों से मालिश करके क्या मैं पाप करूँ! आप कहें तो मैं प्राण दे दूँगा, पर मुझ से यह पाप न करवाइये।"

यह सुन गुरु ने मुस्कराकर कहा—"भाई तुम्हें मेरी बात की अपेक्षा मेरे शरीर के प्रति अधिक आदर है। तुम्हें मेरे शरीर की अपेक्षा उस शरीर से निकलनेवाली बातों का अधिक आदर करना सीखना चाहिए।"

शिष्य अपनी गलती जान गया और उसने वही किया, जो गुरु ने कहा था।
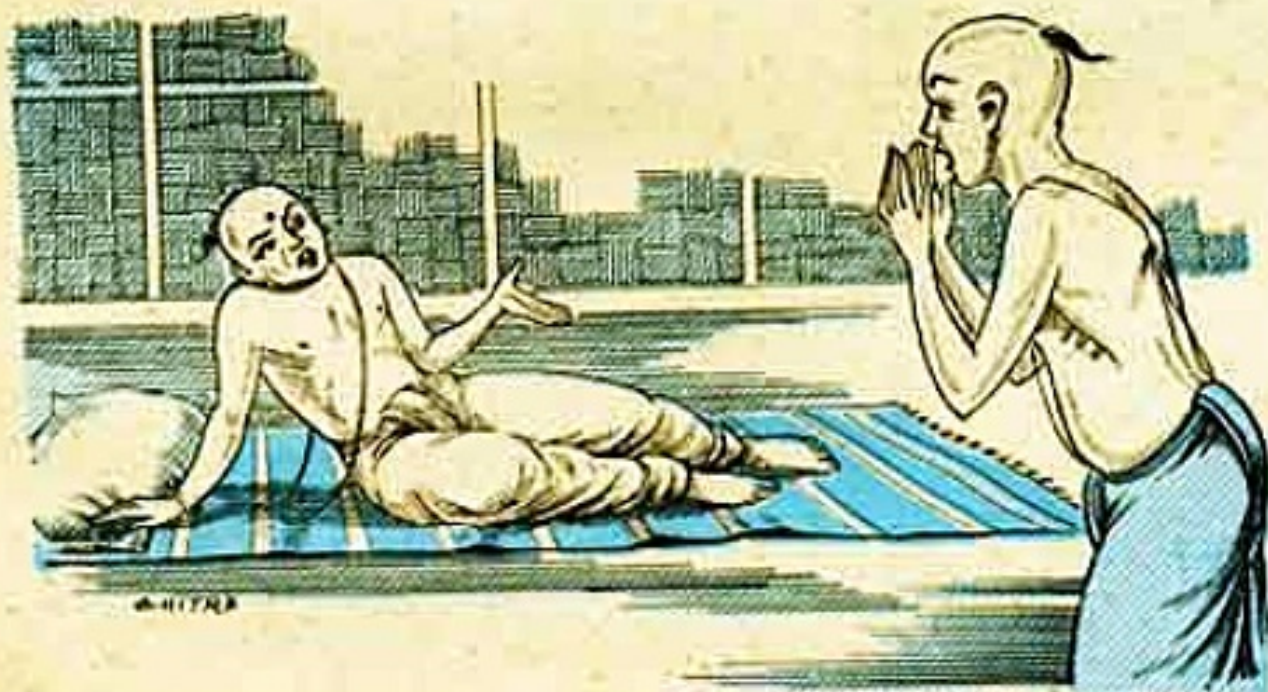
फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

दिसम्बर १९६२ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ अक्टूबर १९६२ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वडपलनी, मद्रास-२६

अक्टूबर – प्रतियोगिता – फल

अक्टूबर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **फिसल गया हूँ ऊपर से !**

दूसरा फ़ोटो : **फँस गया हूँ चक्कर से !!**

प्रेषक : **अशोकचन्द्र,**

C/o आय. बी. श्रीवास्तव, २/४१० नवाबगंज-कानपुर

अन्तिम पृष्ठ

कृष्ण ने कई तरह से कहकर देखा, पर युधिष्ठिर का वैराग्य न गया। तब कृष्ण ने उसे सोड्ष, महाराजाओं की कहानी सुनाई। इसके बाद सृंजय की कहानी सुनाई।

एक बार नारद और उसका भांजा पर्वत, संचार करते करते सृंजय राजा के पास आये। उन दोनों में कोई रहस्य न था। उन में यह भी समझौता था, यदि किसी ने दूसरे से कुछ छुपाया तो वह शापग्रस्त होगा।

सृंजय ने उनका आतिथ्य किया और उनकी सेवा शुश्रुषा के लिए अपनी लड़की सुकुमारी को नियुक्त किया।

नारद को उस लड़की पर प्रेम हो गया और वह प्रेम निरन्तर बढ़ता गया। परन्तु उसने यह बात अपने भांजे को नहीं बतायी। परन्तु पर्वत यह जान गया और उसने अपने मामा को शाप दिया—"तुमने उस लड़की से विवाह किया तो तुरन्त बन्दर हो जाओगे।"

नारद ने भी शाप दिया कि तुम स्वर्ग में संचार नहीं कर सकोगे। फिर, मामा और भांजे अलग अलग हो गये।

नारद ने सृंजय के पास जाकर कहा कि वह अपनी लड़की, सुकुमारी का उसके साथ विवाह कर दे, राजा मान गया और उसने उसकी शादी कर दी। नारद बन्दर हो गया।

कुछ समय बाद पर्वत नारद के पास आया। उसने उससे अनुमति माँगी कि उसे स्वर्ग में संचार करने दिया जाय। तब दोनों ने अपने शाप वापिस ले लिये।

कुछ दिन सृंजय के यहाँ रहने के बाद पर्वत ने उससे कोई वर माँगने के लिए कहा। सृंजय ने कहा कि इन्द्र के समान उसके एक लड़का हो।

"हाँ, ऐसा ही होगा—पर तुम्हें उसे इन्द्र से बचाना होगा।" पर्वत ने कहा।

"तो उसको चिरायु भी दीजिये।" जब सृंजय ने यह कहा तो पर्वत ने कोई उत्तर नहीं दिया। यह देख नारद ने वचन दिया। "यदि तुम्हारे लड़के पर आपत्ति आयी, तो मैं उसे बचाऊँगा।"

नारद और पर्वत के चले जाने के बाद सृंजय के सुवर्णष्ठीवि नाम का एक लड़का हुआ। जब उसकी कीर्ति सारे संसार में फैलने लगी, तो उसको मार कर आने के लिए, अपने वज्रायुध को इन्द्र ने व्याघ्र रूप में भेजा। जब सुवर्णष्ठीवी को उसकी दायी वन में ले गई, तो एक शेर उसको मारकर अन्तर्धान हो गया। यह जान पुत्रशोक में सृंजय को रोता देख, नारद आया, उसने उसको उपदेश दिया। उसने इन्द्र की अनुमति से उस लड़के को पुनर्जीवित कर दिया।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'